शकर्स एवार्ड

चिल्ड्रन्स बुक ट्रस्ट के सस्थापक तथा अधिशासी न्यासधारी श्री शकर के नाम पर सर्वश्रेष्ठ बाल पुस्तको को दिया जाता हे । यह स्वर्णपदक सर्वप्रथम अन्तर्राष्ट्रीय बाल वर्ष (१९७९) में श्री अरूप कुमार दत्त द्वारा लिखित 'काजीरगा मे आखिरी दाव' पुस्तक को प्रदान किया गया । चिल्ड्रन्स बुक ट्रस्ट द्वारा आयोजित सन् १९७८ की प्रतियोगिता मे बाल साहित्य की श्रेष्ठ पुस्तक को दिया जाने वाला ५००० रुपये का प्रथम पुरस्कार भी इसी लेखक को मिला है ।

लेखक

तेतीस वर्षीय श्री अरूप कुमार दत्त जोरहाट (असम) के एक कॉलेज मे अग्रेजी के अध्यापक है । श्री दत्त स्वतन्त्र लेखक हे और इन्हे कई दूसरे साहित्यिक पुरस्कार भी मिल चुके हे ।

चित्रकार

श्री जगदीश जोशी चिल्ड्रन्स बुक ट्रस्ट मे कार्यरत एक वरिष्ठ चित्रकार है । श्री जोशी ने लगभग ४० पुस्तको का चित्रण किया हे ।

काज़ीरंगा
में आखिरी
दाँव

प्राक्कथन

भारत मे हाथी के बाद दूसरा सबसे बडा जानवर गैंडा है। सख्त चमडी, भारी-भरकम शरीर और मोटी-ताकतवर टागो के कारण यह बहुत बदसूरत दिखाई देता है।

गैंडे की नाक पर एक सीग होता है। वह सचमुच का सीग या हड्डी नही होती बल्कि बालो के गुच्छे एक साथ चिपक कर एक कडी वस्तु का रूप ले लेते है। यह सीग मास मे से उगता है और यदि किसी कारणवश टूट जाय तो फिर उग आता है। कुछ लोगो का विश्वास है कि गैंडे के सीग से बहुत अच्छी दवाई बन सकती है। इसीलिए बाजार मे इसकी बहुत माग है और खरीदार काफी बडी कीमत देकर इसे खरीदने को तैयार रहते है।

गैंडा घास-पात खाने वाला पशु है। वह बडी देर तक खुले मैदान मे चरता रहता है या अपना बहुत-सा समय तालाब या झील के छिछले पानी मे बिताता है। सामान्यत गैंडा दूसरे जानवरो पर हमला नही करता। दूसरे जानवर भी उसका भारी-भरकम शरीर, उसकी ताकत और उसकी डरावनी सूरत देखकर उससे दूर ही रहते है। यहा तक कि बाघ और चीते भी उसकी डरावनी सूरत देखकर उसका

रास्ता नही काटते ।

गेंडा किसी को तग नही करता न ही कोई इसे सताता है । परन्तु फिर भी उसका एक शत्रु है और वह है मनुष्य ।

मनुष्य पशुओ को केवल खाने के लिए ही नही बल्कि आनन्द और लाभ के लिए भी मारता है । उसने बिना सोचे-समझे इतने पशुओ को मारा है कि उनकी कई जातिया समाप्त हो गई है । कई के समाप्त हो जाने का खतरा है ।

इसलिये अब जगल मे रहने वाले जानवरो की सुरक्षा के लिये अनेक उपाय किये जा रहे है । अनेक जगलो के बहुत से बडे-बडे हिस्से उनके लिए सुरक्षित क्षेत्र घोषित कर दिये गये है । असम मे ब्रह्मपुत्र नदी के दक्षिणी तट पर एक ऐसा ही आरक्षित क्षेत्र है जिसे काजीरगा वन्य जीव आरक्षित क्षेत्र या मृगवन या अभयारण्य कहते है । यहा गेंडे, हाथी, बाघ, चीते, हिरण तथा दूसरे अनेक वन्य पशु स्वतन्त्र विचरते है ।

हालाकि वन-अधिकारी बहुत सावधान रहते है फिर भी शिकार-चोर इन क्षेत्रो मे घुसकर कानून तोडते हैं और पैसे के लालच मे वन्य पशुओ को पकडते या उनका शिकार करते है ।

शिकार-चोर

8787

किसी पशु की दर्द भरी चीख ने रात के सन्नाटे को एकाएक भग कर दिया। ऐसा लगा मानो कैद मे पडा कोई पशु जीजान से मुक्त होने की कोशिश कर रहा हो।

जिन लोगो ने गढा बनाकर पशु को फसाया था वे पास ही, तालाव के किनारे बनी एक झोपडी मे छिपे हुए थे। उन्होने पशु के छटपटाने की आवाज सुनी। उनका सरदार झोपडी से बाहर आया और बडे ध्यान से उस आवाज की जाच करने लगा। जब उसे विश्वास होगया कि सही जानवर फस गया है तो वह अपने साथियो की ओर मुडा। उसके चेहरे पर क्रूर मुस्कान थी। उसने कहा, "हमने उसे फसा लिया। हमने गैंडे को पकड लिया।"

शिकार-चोरो का यह गिरोह असम के काजीरगा वन्यजीव आरक्षित क्षेत्र मे सक्रिय था। उस गिरोह मे छ हट्टे-कट्टे आदमी थे। उन्हें गैंडे की आदतो के बारे मे पूरी जानकारी थी। जैसे कि वह हमेशा एक ही राह से आता-जाता है और सदा एक ही स्थान पर मल त्याग करता है।

कई दिन से ये चोर इस गैंडे की गतिविधियो पर कडी नजर रखे हुए थे। जब वे उसके मार्ग के बारे मे आश्वस्त हो गये तो उन्होने उस स्थान के आसपास जहा उसकी लीद का ढेर पडा था, एक गहरा गड्ढा खोदा और उसे बास की खपच्चियो, घास और गीली मिट्टी से ढक दिया। उसके बाद

कुछ ही दूर एक गुप्त और सुरक्षित स्थान पर उन्होंने एक काम चलाऊ झोपडी बनाई और उसमे बैठकर गैंडे के फसने की राह देखने लगे ।

गैंडे की डरी हुई घुरघुराहट और फुफकार से उन्हे पता चल गया कि अब उनकी प्रतीक्षा समाप्त हो गई है । वे बडी फुर्ती से दबे पाव, घनी, लम्बी घास के घेरे मे से निकल कर आवाज की दिशा मे चल दिये । जैसे ही वे गड्ढे के निकट पहुचे गैंडे के फुफकारने की आवाज तेज़ हो गई । वे लोग अपने सरदार के आदेशानुसार कार्य करने लगे । एक शिकारी बासो पर लिपटे, मिट्टी के तेल से भीगे चिथडो की कई मशालें लिए था । उसने उन्हे गड्ढे के चारो ओर गाड कर जला दिया। मशालो की रोशनी से जगल के रखवालो को पता चल जाने का खतरा तो था परन्तु ऐसा करने के सिवा और कोई चारा भी नही था ।

गड्ढे मे फसा गैंडा धुंधली रोशनी मे और भी विशालकाय दिखाई दे रहा था । वह बार-बार अपना सिर गड्ढे की दीवारो से मार रहा था । भयभीत गैंडे के इस निरर्थक प्रयास पर चोर हस रहे थे ।

वे सब अपने काम मे बडे पटु थे । एक मजबूत रस्से के टुकडो से उन्होंने फन्दे बनाये और गैंडे की थूथनी, गर्दन और टागो को उनमे फसा दिया । गैंडा पूरी शक्ति से लड रहा था परन्तु आदमी भी अपने काम मे बहुत चतुर थे । देखते-देखते उन्होने उस विशालकाय जानवर के पूरे शरीर को रस्सो से जकड दिया । फिर इन रस्सो को खूब कस कर जमीन मे गडे

हुये लोहे के खूटो से बाध दिया।

अब गिरोह का सरदार स्वय आगे बढा। एक चौडे तेज फलक की कटार लेकर वह गढे मे उतर गया। विवश और असहाय गैंडा कुछ न कर सका।

सरदार गैंडे की पीठ पर बैठ गया और उसकी थूथनी पर से सींग काटने लगा। बेबस गैंडा दर्द से छटपटाने लगा। उसकी थूथनी से रक्त का फव्वारा बह निकला। लेकिन चोरो का सरदार उसके सीग पर निर्मम प्रहार करता ही चला गया। कुछ देर बाद उसने मास और रक्त से लथपथ सीग को उठा लिया और अपने साथियो को दिखाया। उसके हाथ रक्त से भरे थे। उसके मुँह पर सफलता की पैशाचिक हसी थी। वह गढे से बाहर निकल आया।

चोरो का काम पूरा हो चुका था। उन्होने मशाले बुझा दी और जैसे दबे पाव आये थे वैसे ही चुपचाप चले गये।

बेचारा गैंडा गड्ढे मे वैसे ही बधा हुआ पडा रहा। धीरे-धीरे उसकी जीवन-शक्ति क्षीण होती जा रही थी। सुबह होते-होते वह जीव बेमौत मर जायेगा और गिद्ध तथा चीले उसकी लाश पर दावत खाने के लिए झपट पडेंगे।
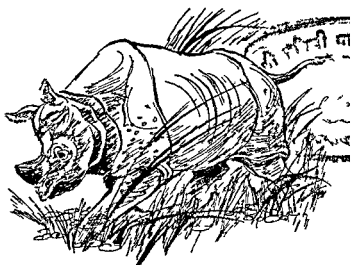
धनाई, बुबुल और जोन्ती एक युवा हथिनी मखोनी की पीठ पर बैठे काजीरगा के विशाल क्षेत्र मे घूम रहे थे। उनके चारो ओर दूर-दूर तक आदमकद घास और घनी झाडिया फैली हुई थी। यहा-वहा बडे-बडे पत्तो वाले ऊचे पेडो के कारण इस परिदृश्य की एकरूपता मे भिन्नता आ गई थी।

इन तीन लडको मे धनाई सबसे बडा था। उसकी आयु यही कोई चौदह वर्ष की रही होगी। उसके पिता काजीरगा पर्यटक विभाग मे महावत थे। उनके गाव मे तीन हाथी थे उनमे एक मखोनी थी। उसकी देखभाल धनाई ही करता था। वह उसको नहलाता, खिलाता, उससे बाते करता और कई प्रकार के खेल व करतब भी सिखाता। इस तरह मखोनी और धनाई मे गाढी मित्रता हो गई थी।

बुबुल और जोन्ती जुडवा भाई थे। उनकी उम्र तेरह वर्ष की थी। उनकी शक्ल एक दूसरे से असाधारण रूप से मिलती-जुलती थी। किसी बाहरी आदमी के लिए यह जानना असभव सा था कि उनमे कौन बुबुल है और कौन जोन्ती। केवल बुबुल बाये हाथ से काम करता था और जोन्ती का दाया हाथ अधिक चलता था। वे दोनो गाव के मुखिया के बेटे थे।

तीनो लडके गाव के स्कूल मे एक ही कक्षा मे पढते थे और गहरे मित्र थे। उन दिनो गर्मी की छुट्टिया थी। तीनो लडके नये-नये स्थान देखने के लिए प्रतिदिन सैर-सपाटे को

निकल पडते ।

उस दिन सुबह उन्होने तय किया कि आज वन के बीच से होकर ब्रह्मपुत्र नदी के तट तक जायेगे । जगल के हर कोने से वे खूब परिचित थे ।

साधारणतया मृगवन नाना प्रकार की आवाजो से गूजता रहता है जैसे पक्षियो की चहचहाहट, झीगरो की झकार और यदाकदा किसी गैडे की कर्कश आवाज । पर उस सुबह वहा अजीब सा सन्नाटा छाया हुआ था ।

हिरणो के झुंड मूर्तिवत खडे-खडे हवा को सूंघ रहे थे । वातावरण यकायक गरम और उमसदार हो उठा था । काले बादल उमड रहे थे ।

"ऐसा लगता है कि तूफान आनेवाला है," बुबुल ने कहा ।

"हा, लगता है यह तूफान ऐसा-वैसा नही बल्कि भयानक होगा," जोन्ती सहमत होते हुए बोला ।

धनाई ने मखोनी को रुकने का सकेत किया और क्षितिज की ओर देखते हुए कहा, "देखो बादल कैसे गरज रहे है । बिजली भी चमक रही है । आओ वापस लौट चले ।"

"अरे, नही," बुबुल और जोन्ती ने एक साथ विरोध किया । "हमे तो भई भीगने मे बडा मजा आता है । और फिर हम नदी मे तैरने ही तो जा रहे है ।"

धनाई ने उत्तर दिया, "मै 'हम' सबके बारे मे नही मखोनी के बारे मे सोच रहा हू । तुम तो जानते ही हो कि तूफान मे मखोनी कितनी परेशान हो जाती है । यदि केवल वर्षा ही होती तो कोई बात नही थी । किन्तु बिजली की कडक बापरे, उससे
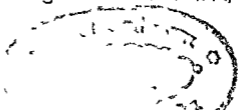
तो वह बहुत बुरी तरह डरती है।

वे लौट पडे। लौटते समय उन्होने छोटा रास्ता लिया।

"देखो, वहा देखो," अपने बायी ओर सकेत करके जोन्ती चिल्लाया। वहा से करीब सौ गज की दूरी पर कुछ गिद्ध जमीन पर बैठे हुए थे और अनेक ऊपर आकाश मे मडरा रहे थे। वे भी नीचे उतरने को उत्सुक थे।

"वहाँ पर अवश्य कोई मरा हुआ जानवर होगा," बुबुल ने कहा।

धनाई बोला, "चलो चलकर देखे।" उसने मखोनी को

गिद्धो के समूह की ओर चलने का सकेत किया । उनके निकट पहुचते ही सब गिद्ध चीखते-चिल्लाते उड गये । मानो वे उनके आने का विरोध कर रहे हो । वहा लडको ने एक वीभत्स दृश्य देखा । गड्ढे के अन्दर एक विशालकाय गैंडा, रक्त और कीचड से लथपथ, मरा पडा था । गिद्धो ने अपने भोजन के लिए उसके शव को नोच डाला था । उसकी चमडी और मास के टुकडे इधर-उधर बिखरे पडे थे ।

"वोह् मखोनी, वोह्," धनाई ने मखोनी को बैठने का आदेश दिया । तीनो लडके उसकी पीठ से कूद कर उतरे और गड्ढे के निकट जा पहुचे । मृत गैंडे के नुचे हुए शव को वे तीनो अवाक खडे देखते रहे । "देखो, देखो, इसका सीग गायब है," धनाई ने कठोर स्वर मे कहा । "ज़रूर यह शिकार-चोरो का काम है । हमे तुरन्त इसकी सूचना वन-विभाग के अधिकारियो को देनी चाहिए ।"

बुबुल ने सुझाव दिया, "मेरे विचार मे यह अधिक अच्छा होगा कि हम पहले चारो ओर एक नजर डाल ले । वर्षा होने के बाद फिर कोई सुराग नही मिलेगा । अभी शायद चोरो के बारे मे कुछ पता चल जाय ।"

"तुम बिलकुल ठीक कह रहे हो," धनाई ने सहमति दी । "हमे अब और समय नष्ट नही करना चाहिए । आकाश की ओर देखो कैसा घटाटोप हो रहा है । मखोनी भी बेचैन हो रही है ।"

तीनो लडके अलग-अलग दिशाओ मे चल पडे । जोन्ती उन तीनो मे अधिक चौकन्ना और सतर्क बालक था । सबसे

पहले उसी ने आवाज लगाई, "तुम दोनो यहा आकर देखो, यह क्या है ?" वे लपककर जोन्ती के पास पहुचे । उसने उन्हे गैंडे की लीद के ढेर पर आदमी के पैर का निशान दिखाया । "बस इतना ही," धनाई ने कुछ निराशा से कहा, "उनमे से किसी आदमी का पैर लीद पर पड गया होगा । केवल एक निशान से तो किसी को नही पहचाना जा सकता है ?"

"जरा गौर से देखो, धनाई ," जोन्ती ने उसका ध्यान फिर निशान की ओर आकर्पित करते हुए कहा, "यह दाहिने पैर का निशान है और उसमे अगूठा नही है ।"

यह सुनकर वे दोनो उत्तेजित हो उठे । निशानो के लिए जमीन की ओर ध्यान से देखते हुए वे आगे वढने लगे । शीघ्र ही जोन्ती की तेज आखो ने वैसे ही दो निशान और देखे ।

उनमे से किसी व्यक्ति का पैर लीद मे सन गया होगा । इसलिए उसके चलने से जमीन पर निशान बनते चले गये थे । जो निशान लडको को मिले थे वे सव एक ही जैसे थे । उन सब मे ही पैर का अगूठा गायब था ।

"इससे खोज करने मे हमे वडी मदद मिलेगी, है न ?" जोन्ती ने दूसरो को बताया । "यह स्पष्ट है कि उस गिरोह मे एक आदमी के दाये पैर का अगूठा गायब हे ।"

जोन्ती की इस खोज से धनाई और वुवुल बडे प्रभावित हुए । वुवुल बोल उठा, "बहुत अच्छे । यह एक महत्वपूर्ण प्रमाण हो सकता है ।"

तूफान अव उनके सिर पर था । पछाही हवा के झोको मे वर्षा की भीनी-भीनी गन्ध आ रही थी ।
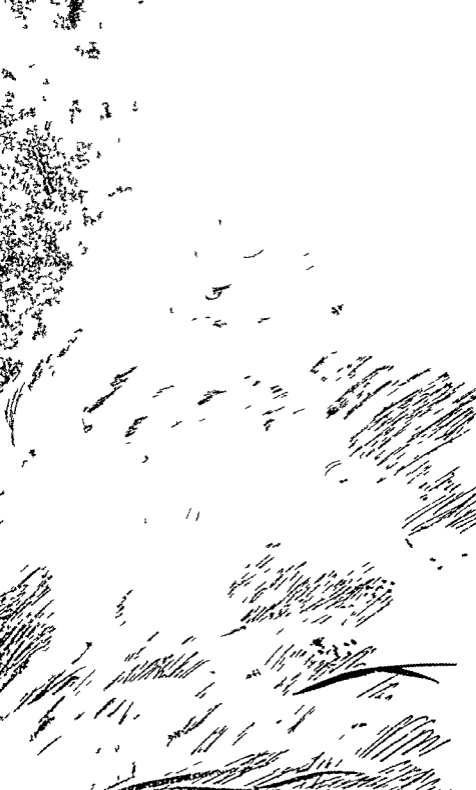
"जल्दी करो। यहा से निकल चले," धनाई ने कुछ परेशान और उतावले होकर कहा, "और सीधे चलकर वन-अधिकारियो को सूचना दे।"

मखोनी बहुत परेशान हो उठी थी। वह सूंड उठाकर चिंघाडने लगी। जैसे ही तीनो लडके उसकी पीठपर सवार हो गये वह लम्बी-लम्बी घास मे से होती हुई तेजी से चल पडी।

लडको ने पीछे मुडकर देखा। गिद्ध भोजन की तलाश मे वापस गैंडे के शव पर टूट पडे थे।

मानो अचानक आकाश का ढक्कन किसी ने खोल दिया हो। पानी की तेज बौछारे पडने लगी। आधी और पानी ने सारे क्षेत्र को झकझोर दिया। तीनो लडके बुरी तरह से भीग गये थे। वे मखोनी की चौडी पीठ से चिपक गये जिससे कि हवा के तेज थपेडे उन्हे उठाकर कही दूर न फेक दे।

भयभीत हिरणो के झुंड चौकडी भरते हुए उनके पास से निकल गये। मुर्गो और तीतरो की तीखी आवाज से वन गूज रहा था। तूफान उनकी कल्पना से कही भयकर था।

इस भारी वर्षा मे बेतहाशा भागती हुई मखोनी निरीक्षण मीनार के पास से होकर मुख्य सडक पर आ गई थी। थोडी ही देर मे कुछ दूर पर उन्हे मूसलाधार वर्षा के बीच मे से वन विभाग का दफ्तर दिखाई देने लगा।

और सकेत

सिर से पैर तक भीगे तीनो लडके फर्श को भिगोते हुए जब जिला वन अधिकारी श्री नियोग के दफ्तर मे घुसे तो वे चकित रह गये। श्री नियोग आरक्षित वन की देखभाल करते थे और उन तीनो को अच्छी तरह से जानते थे।

तीनो लडके एक साथ बोल उठे, "नियोग मामा, उन्होने एक गैडा और मार डाला है।"

श्री नियोग की आकृति कठोर हो उठी।

"एक-एक करके बात करो। धनाई, तुम पूरी बात बताओ।"

धनाई ने उन्हें वह सब कुछ बताया जो उन तीनो ने काजीरगा आरक्षित वन मे देखा था।

"वे सीग ले गये हैं," धनाई ने बात समाप्त करते हुए कहा, "यह काम शिकार-चोरो का है, इसमे कोई शक नही।"

श्री नियोग एक अलमारी खोलते हुए फुसफुसाये, "यह बुरा हुआ।" उन्होने लडको को अलमारी मे से एक तौलिया निकाल कर दिया और कहा, "पहले तौलिए से बदन पोछ लो। उसके बाद चाय और बिस्कुट खाना।"

"परन्तु नियोग मामा, उन्होने गैडा मार दिया है। आपको जल्दी से उन चोरो को पकडना होगा।"

"तुम चिन्ता मत करो बुबुल। हम उन्हें अवश्य पकड लेंगे। जरा तूफान को थम जाने दो। फिर हम अपना काम आरम्भ करेंगे।"

दफ्तर के चपरासी ने इन तीनो को गर्म-गर्म चाय और बिस्कुट लाकर दिये। वे अभी खा ही रहे थे कि फूकन वहा आ पहुचा। वह मुख्य वनपाल था। श्री नियोग ने उसे बुला भेजा था।

"फूकन, इन लडको ने अभी-अभी एक मरा हुआ गैंडा देखा है। उसका सीग गायब है। शिकार-चोरो ने फिर हाथ मारा है।"

फूकन के छाते से पानी चू रहा था। उसने उसे कमरे के एक कोने मे टिका दिया। वह लम्बा और पतला व्यक्ति था। उसकी आखें चूधी-चूधी थी। उसने लडको से पूछा, "बोलो, तुम तीनो आरक्षित वन मे क्या कर रहे थे ? क्या तुमने भीतर जाने का अनुमति पत्र लिया था ?"

यह अप्रत्याशित प्रश्न सुनकर तीनो लडके कुछ घबरा गये। सबसे पहले धनाई ने अपने को सभाला और उत्तर दिया, "हम अपनी पालतू हथिनी मखोनी पर सवार होकर कही जा रहे थे। नियोग मामा जानते है कि हम अक्सर वन मे जाते है।"

"यह आरक्षित वन है। बिना अनुमति-पत्र के तुम्हे उसमे प्रवेश नही करना चाहिए।"

"अरे, फूकन छोडो भी, यह लडके कोई पर्यटक थोडे ही है। इस आरक्षित वन के बनने से बहुत पहले इन के गाव यहा रहे हैं। काजीरंगा और इसके जीव-जन्तु इनके जीवन का अटूट अग है।"

फूकन को यह अच्छा नही लगा। उसने सभलते हुए कहा,

"मुझे क्षमा कर दीजिए। चोरी की घटनाओ की पुनरावृत्ति ने मुझे चिडचिडा बना दिया है।"

जोन्ती बोला, "नियोग मामा, आपने कहा है शिकार-चोरो ने फिर हाथ मारा है। इसका अर्थ हुआ कि गैंडा मारने की यह पहली घटना नही है।"

"दुर्भाग्यवश पिछले दो महीनो मे गैंडा मारने की यह पाचवी घटना है। ऐसा लगता है कि इस मे चोरो के किसी कुशल गिरोह का हाथ है। बडी मुश्किल है? वे हाथ मारते है और बिना कोई निशान छोडे लोप हो जाते है। हम यह भी नही जानते कि यह गिरोह स्थानीय है या बाहर से आया है। वन-अधिकारी अभी तक किसी भी बात का पता नही लगा सके है।"

फूकन बोला, "मेरे विचार से इस घटना का भी कोई निशान नही मिलेगा। बाहर मूसलाधार वर्षा हो रही है। वर्षा घटनास्थल से सब तरह के निशान मिटा देगी।"

यह सुनकर बुबुल बोल उठा, "हमे एक सुराग मिला है। हम लोगो ने घटनास्थल के पास एक ही पैर के तीन निशान देखे है। इन सबो मे पैर का अगूठा गायब है। हमे विश्वास है कि कम से कम एक चोर के दाये पैर का अगूठा नही है।"

श्री नियोग तनकर बैठ गये।

"शाबाश, शिकार-चोरो के बारे मे यह पहली काम लायक सूचना मिली है।"

"बेकार," फूकन ने तिरस्कारपूर्वक कहा, "ये निशान तुम्हारी कल्पना की उपज हैं। सूरज की गर्मी के कारण कल

धरती पत्थर की तरह सख्त थी। उस पर निशान कैसे दिखाई दे सकते थे ?"

"नही," धनाई ने पूर्ण विश्वास के साथ कहा, "उस आदमी का पैर लीद पर पड गया था। इसलिए पैरो के निशान बिलकुल साफ थे। हम तीनो ने खूब अच्छी तरह देखे है।"

"खूब कहानी गढी है, और अब चूकि वर्षा से सब निशान धुल गये होगे इसलिए तुम उन्हे हमे दिखा भी नही सकते। है न यही बात ?"

श्री नियोग फूकन की इन व्यगात्मक बातो से चिढ गये और बोले, "तुम तो ऐसे बात कर रहे हो जैसे लडके ही चोर हो।"

"नही साहब ! बात केवल इतनी है कि मै नही चाहता कि बाहर के लोग इन बातो मे हस्तक्षेप करे।"

"यह इनका कसूर तो नहीं है कि उन्हे गैंडे का शव मिला। कम से कम इनमे इतनी बुद्धि तो है कि उन्होने तूफान आने से पहले धरती पर निशानो की खोज की। बच्चो ! क्या तुम्हे वहा कुछ और भी मिला ?"

"नही नियोग मामा, और कुछ भी नही।"

"आरम्भ तो अच्छा है। तूफान बन्द हो गया है। आओ चले। चलो फूकन जीप लाओ। पहले हम पाचो चल कर घटना-स्थल देख आये। उसके बाद गैंडा मारने की सूचना दूसरो को देगे।"

तूफान निकल गया था और आकाश फिर नीला दिखाई दे रहा था।

जीप तेजी से आरक्षित वन मे जाने वाली सडक पर चली जा रही थी। वर्षा के कारण सब कुछ धुला-धुलाया और पहले से अधिक हरा दिखाई दे रहा था। हिरणो के झुड इधर-उधर उछल-कूद कर रहे थे। हवासिल, जलकाक और सारस घास से भरे झील के छिछले पानी मे किलोले कर रहे थे। लगता था जैसे वर्षा के उपरान्त आरक्षित वन जीवित हो उठा हो।

जिस सडक पर वे जा रहे थे वह उन्हे सीधे गड्ढे के पास नही ले जाती थी। उन्हे कुछ दूर पर जीप रोक देनी पडी और वहा से कई फरलाग पैदल चलने के बाद ही उन्हे गिद्ध दिखाई दिये।

बुबुल ने गिद्धो को देखकर घृणा से कहा, "ये गिद्ध कितने बदसूरत हैं। मुझे सभी पक्षी अच्छे लगते है किन्तु गिद्ध नही। शायद इसलिए कि वे शवो का मास खाते हैं।"

श्री नियोग ने उत्तर दिया, "ये देखने मे बदसूरत जरूर हैं परन्तु ये बडे काम के है।"

बुबुल ने यह सुन कर पूछा, "ये क्या काम आते है?"

"अरे, ये शवो को खा जाते है। नही तो उनके सडने की दुर्गन्ध से सारा क्षेत्र ही दूषित हो जाये। एक अजीब बात है। जितना पक्षी स्वय बदसूरत होता है उतना ही वह हमारी धरती को सुन्दर बनाये रखने मे सहायता करता है। तुम जानते हो कौआ सुन्दर नही होता किन्तु कूडा-कर्कट साफ करने मे उससे अधिक योग्य और कुशल कोई भी पक्षी नही है।"

तीनो लडके चुपचाप चल रहे थे मानो किसी गहरे सोच मे हो।

वे गढे तक पहुचे ही थे कि सहसा धनाई ने पूछा, "देखो शव के पास गिद्ध नही है। पता नही गिद्ध शव का मास क्यो नही नोच रहे?" लेकिन जब उन्होने गढे की ओर देखा तो प्रश्न का उत्तर आप ही आप मिल गया। गढा पानी से भरा हुआ था और गैंडे का शव उस मे डूबा हुआ था।

"तो यह बात है," श्री नियोग ने एक गहरी सास ली, "वर्षा के कारण जो हानि होनी थी हो गई। इस गढे का पानी सूखने मे अब घटो लगेंगे?"

"क्या हम शव निकालकर उसे दफ्नायेगे नही?"

"नही, हम ऐसा क्यो करें। बेचारे गिद्धो को उनके भोजन से वचित क्यो किया जाय? जब वे भोजन कर चुकेंगे तो मैं कुछ आदमी भेज कर गढा मिट्टी से भरवा दूगा जिससे कोई दूसरा जानवर इसमे न गिर पडे।"

"क्या अब हम वापस चल रहे है?" फ्कन ने पूछा। वह अभी तक चुप था।

"नही," श्री नियोग बोले, "हम कुछ देर और इधर-उधर खोजबीन करेंगे। गैंडे को पकडने मे कई दिन लगते है। इसलिये इन आदमियो ने अवश्य ही रहने के लिये यहा कही कोई झोपडी बनाई होगी। शायद झील के किनारे बनाई हो। वहाँ इसलिए कि पीने और बर्तन इत्यादि धोने के लिए पानी चाहिए।"

श्री नियोग ने आदेश दिया और दल के सदस्य चारो ओर खोजबीन करने के लिए बिखर गये।

जैसे ही जोन्ती छोटी झील की ओर बढा तो उसने एक चील को झाडियो मे झपट्टा मारते देखा। कुछ क्षण बाद वह

एक केले का पत्ता पजो मे लेकर ऊपर उड गई। आसपास कही केले के पेड नही थे। यह केले का पत्ता कहा से आया ? तभी जोन्ती झाडियो की ओर बढा। उन झाडियो के बीच एक सकरे स्थल मे बाहर निकलते ही उसने वह झोपडी देखी। उस झोपडी की दीवारे सरकडे की बनी थी और छत हाथी घास की। शायद उन आदमियो ने उसी मे आश्रय लिया होगा। तूफान मे उसकी आधी छत उड गयी थी। जोन्ती उस झोपडी मे घुसने ही वाला था कि उसे भीतर किसी के चलने की आहट मिली। वह वही का वही खडा हो गया।

बडी सावधानी से उसने दीवार के एक सुराख मे से भीतर झाका। अरे, यह तो फूकन है और निशानो के लिए झोपडी के फर्श का निरीक्षण कर रहा है।

जोन्ती अन्दर चला गया और बोला, "तो तुम्हे यह मुझ से पहले ही मिल गयी ?" यह सुनते ही फूकन बुरी तरह से उछल पडा।

"तुम्हारा इस तरह से यहा चुपचाप आने का क्या अर्थ है ?" फूकन ने झल्लाकर कहा।

"क्या ? क्या तुमने मुझे शिकार-चोर समझ लिया था ?"

"अपना यह मजाक बद करो। जाओ, और दूसरो को भी यहा ले आओ।"

जोन्ती वापस गढे के निकट गया और बाकी लोगो को पुकार कर अपने साथ उस झोपडी तक ले आया।

"यहा विशेष कुछ नही है," श्री नियोग ने झोपडी का निरीक्षण करने के बाद कहा।
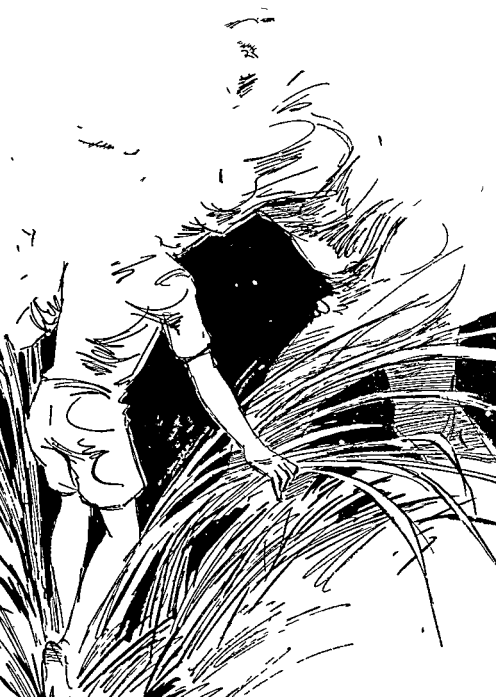
झोपडी के भीतर स्थान काफी खुला था। फर्श पर केले के पत्ते और मिट्टी के सकोरे विखरे पडे थे। झोपडी के वीचोवीच एक चूल्हा वना हुआ था जिसकी राख ठण्डी हो चुकी थी।

"हा," धनाई ने श्री नियोग से सहमत होते हुए कहा, "यहा तो कुछ भी पता नही चल रहा है।"

"यहा वक्त वरवाद करने से तो यह अच्छा होगा कि हम अव दपतर वापिस चले और शिकार-चोरो की चोरिया रोकने के लिए कुछ कडे कदम उठाये," फूकन वुदवुदाया।

"जरा ठहरो," जोन्ती वोला। वह फर्श पर घुटनो के वल वैठा हुआ कुछ खोज रहा था। "इस कूडे कर्कट से हम कुछ वातो का अनुमान लगा सकते हे। पहले यह कि इस गिरोह मे छ आदमी थे।"

"तुमने यह अन्दाजा कैसे लगाया?" श्री नियोग ने चकित होकर पूछा।

"मैंने फर्श पर पडे दाओ के निशानो से यह अनुमान लगाया। दाओ लिये आदमी जव जमीन पर वैठता है तो दाओ को अपने निकट ही धरती मे गाड देता है। यहा छ निशान हैं। मैंने मिट्टी के सकोरे भी गिने। वे भी छ है। लेकिन फिर भी यह केवल अनुमान ही हे।"

"अनुमान काफी ठीक है," श्री नियोग सहमत होकर वोले, "और कुछ?"

"हा, नियोग मामा। एक और वात है, आप सोच रहे होंगे कि चोर स्थानीय हैं या वाहर से आये हैं। मैंने उनके भोजन मे से वची हुई चीजें देखी है। वे लोग गन्दे थे। जिन केले के

पत्तो मे उन्होने भोजन किया उन्हे बाहर भी नही फेका । उन पत्तो पर उनकी जूठन को देखा जा सकता है । चावल और सरसो के तेल मे बनी मछली अभी भी पत्तो पर लगी हुई हे । यह तो हमारे गाव के लोगो का प्रिय भोजन है । उन्होने पिठा भी खाये है । इस सबके बाद कतई सदेह नही रह जाता कि वे आसपास के ही किसी गाव के रहने वाले ह ।"

"इन व्यर्थ की वस्तुओ से तुमने खूब पता लगाया," श्री नियोग ने चकित हो कर कहा, "जोन्ती तुम इतने बुद्धिमान हो कि तुम्हे निश्चय ही आखेट-रक्षको का मुखिया बनाया जा सकता है । चलो सुबह-सुबह यहा आना बेकार नही हुआ । हम जान गये है कि चोरो का गिरोह आसपास के गावो के लोगो मे से ही है । और गिरोह मे छ आदमी हे । इतना ही नही एक आदमी के पैर का अगूठा भी नही है ।"

फूकन बडबडाया, "इससे क्या होगा । यह सब तो अदाजा ही है । ये चोर बडे चालाक होते हे । इतने गाववालो मे से इन्हे कैसे पहचाना जा सकता है ।"

आगे खोजबीन करने से कुछ नही मिला । श्री नियोग ने अपनी घडी देखते हुए कहा, "दो बज रहे है । क्या तुम लोग खाना खा चुके हो ?"

"नही," लडके एक साथ बोल उठे ।

"चलो अब वापस चले," श्री नियोग ने कहा, "आज तुम लोग मेरे यहा खाना खाओगे—उबले चावल और सरसो के तेल मे पकी मछली बनी है । खाने के समय और बात करेगे । फूकन, तुम्हारा भी स्वागत है । तुम भी चलो ।"

चेतावनी

श्री नियोग के घर खाना खाते समय सब लोग बिलकुल चुप रहे। लडके श्रीमती नियोग को मामी कहते थे। यह उनके पकाने का कमाल था कि सब इतनी मग्नता से खाना खा रहे थे। सरसो के तेल मे मछली बहुत ही बढिया बनी थी। साथ के दूसरे खट्टे-मीठे पदार्थ भी बहुत स्वादिष्ट थे। खाने के बाद साधारणतया उदास और खिन्न रहने वाला फूकन भी प्रसन्न दिखाई दे रहा था।

श्री नियोग ने उनसे पहले चार गैडो की मृत्यु के बारे मे विस्तार से बातचीत की। सबके सब इन्ही दिनो मे मारे गये हैं और सबके मारने का तरीका एक ही जैसा है। यह भी तय है कि सारे गैडे एक ही गिरोह ने मारे है।

"यह भी निश्चय है कि चोरो का गिरोह आसपास का ही है। उन का सम्पर्क बाहर के लोगो से भी है। गैडे के सीग की माग सबसे ज्यादा हागकाग जैसे स्थानो मे है। वही इसका सबसे अधिक मूल्य मिलता है। इस लिए इन चोरो से खरीदने वाला कोई न कोई बाहर का खरीददार अवश्य होगा।"

"या बाहर से किसी व्यक्ति ने इन चोरो को पैसे देकर काम करने के लिए कहा होगा," धनाई ने सुझाव दिया।

"ऐसा हो सकता है। पर इससे तो हमारा काम और भी कठिन हो जाता है।"

"मगर नियोग मामा," बुबुल बीच मे ही बोल उठा,

"वाहर से आनेवाले को यहा वार-वार आना पडेगा और वहुत दिनो तक ठहरना भी होगा ?"

"मैने पूछताछ की है और जोन्ती की वात से मुझे विश्वास हो गया है कि शिकार-चोर स्थानीय व्यक्ति है। इसका अर्थ है कि किसी वाहर वाले ने सीधे चोरो को पैसे नही दिए। वीच मे जरूर कोई यही का आदमी है जो यह काम कर रहा है।"

"यदि यह मान ही लिया जाय कि इस काम मे कोई बाहर का व्यक्ति मिला हुआ है तो," फूकन वोला।

"मेरे विचार मे इसमे कोई सन्देह नही है," श्री नियोग ने उत्तर दिया, "गैडे के सीग की यहा कोई माग नही है। हमे यह भी याद रखना होगा कि वे लोग अभी तक पाच गैडे मार चुके है। ये शिकार-चोर और उनके मालिक कोई वडी वाजी लगाये है। कुछ भी हो हमे उन्हे रोकना ही होगा।"

"हम से जैसे भी बन पडेगा हम आपकी सहायता करेंगे," धनाई ने वचन दिया।

"जरा ठहरो। मैं तुमको एक परेशान करने वाली वात वता रहा हू। पर यह वात गोपनीय है। हम पाचो तक ही रहनी चाहिये। वाहर नही जानी चाहिए। हमने चोरो को फसाने के लिए जितनी वार योजनाए बनाई हर वार उनकी सूचना शिकार-चोरो को मिल जाती रही है। इसीलिये वे हमारी पकड मे नही आते। शायद उन्हे हमारे शिकार-रक्षको और सुरक्षा-अधिकारियो की गतिविधियो का पूरी तरह पता लग जाता है। इसलिए मैं सोचता हू कि हो न हो कोई हमी लोगो मे से विश्वासघात कर रहा है।"

"यह कैसे हो सकता है ?" फूकन फूट पडा, "सर, क्या आप सचमुच ऐसा समझते हैं कि हमारा अपना कोई आदमी शिकार-चोरो से मिला हुआ है ?"

"दुर्भाग्य से, फूकन, जिस प्रकार शिकार-चोर अपना काम कर रहे है, उसे देखकर मैं इसी परिणाम पर पहुचा हूँ। हम सभी जानते ह कि हमारे आदमी जो वेतन पाते हे वह अधिक नही है। इसलिये हो सकता है कि उनमे से कोई पैसे के लालच से उनसे मिल गया हो।"

"सर, यह तो वडी गम्भीर वात है। क्या मैं अपने आदमियो की जाच करू ?"

"नही फूकन, अभी ऐसा मत करो। इससे विश्वासघाती सतर्क हो जायेगा। पहले उसे विश्वास होने दो फिर हम उसे पकड लेंगे। अभी तक तो सदा चोरो की विजय होती रही है। लेकिन अवकी से पासा जरूर पलटेगा। अब हमारे हाथ मे एक गुप्त हथियार भी है।"

"ऐसा कौन-सा हथियार है," घनाई ने उत्सुकता से पूछा।

"तुम तीनो—सुनो तुम अव हमारे गुप्त हथियार वनोगे।"

"हम ?" तीनो लडके आश्चर्य से बोले।

"हा, तुम। तुम तीनो लडके हमारे लिए सूचनाए एकत्र करने मे मददगार हो सकते हो। यदि हम गाव वालो से सहायता मागेंगे तो चोरो को भी पता चल जायेगा। पर तुम तीनो वुद्धिमान और बहादुर भी हो। अबसे तुम तीनो वन के लिये अवैतनिक शिकार-रक्षको का काम करोगे।"

लडके तन कर वैठ गये। उनकी छाती गर्व से फूल उठी।

"यह बात हम पाचो के बीच मे ही रहनी चाहिए । गोपनीयता अनिवार्य है । अभी जो गैंडा मारा गया है उसके बारे मे किसी को पता नही हे । मुझे इसके बारे मे तो दूसरे वन-अधिकारियो को बताना पडेगा । लेकिन बिना अगूठे वाले आदमी या हमारे बीच मे किसी विश्वासघाती के होने के बारे मे किसी से कुछ नही कहूगा । इससे अधिक महत्वपूर्ण बात यह है कि मैं नही चाहता कि कोई यह जाने कि तुम हमारे लिए काम कर रहे हो । हा, पर तुम अपने माता-पिता से कह सकते हो लेकिन उन्हे भी इस बात को अपने ही तक रखने को कह देना । आज के लिए इतना ही काफी हैं । बस अपने-अपने आख और कान खुले रखना और रोज फूकन को रिपोर्ट देते रहना ।"

तीनो लडके बाहर निकल आये । मखोनी को वे जहा बाध कर गये थे वह वही खडी उनकी राह देख रही थी । उसने चिघाड कर लडको का स्वागत किया । वे सब उसकी पीठ पर सवार हो कर गाव की ओर चल दिए ।

गाव छोटा था । कुछ मिट्टी से बनी झोपडिया थी । उनके चारो ओर धान के खेत थे । गाव मे केवल एक सडक थी और मखोनी बडी शान से उस पर चली जा रही थी । गली के कुत्ते भौक रहे थे और अधनगे बच्चे जोर-जोर से चिल्लाकर लडको का अभिवादन कर रहे थे ।

धनाई के घर पर तीनो लडको के माता-पिता उनकी प्रतीक्षा कर रहे थे । लडके अब तक नही आये थे इसलिये वे बहुत क्रोधित थे । धनाई ने, दिन मे जो कुछ हुआ था वह सब उनको कह सुनाया ।

यह सब सुन कर गाव का मुखिया सयत स्वर से बोला, "लडको, तुमने ठीक किया । तुमको गर्व होना चाहिये कि श्री नियोग ने तुम्हे अवैतनिक शिकार रक्षक नियुक्त किया है । अधिकारियो की सहायता अवश्य करो । किन्तु खूब सावधान और सतर्क रहो । ये शिकार-चोर बडे खतरनाक होते है ।"

"क्या इसमे खतरा नही है ?" धनाई की माता ने पूछा, "ये तो अभी बच्चे ही है ।"

"लडको, अपना ध्यान रखना," धनाई के पिता ने कहा, "और यदि किसी प्रकार की परेशानी हो तो हमारे पास आने से हिचकना मत ।"

"चलो, घर चलने का समय हो गया है," मुखिया की पत्नी ने कहा, "बुबुल और जोन्ती तालाब पर जाकर मुह-हाथ धो आओ ।"

गाव मे शाम के आठ बजे तक लगभग सभी लोग खा-पीकर सो गये थे ।

धनाई बिस्तर पर लेटा हुआ था । उसे नीद नही आ रही थी । वह बार-बार दिन मे घटी घटनाओ के बारे मे सोच रहा था । बिना अगूठे वाले आदमी की कैसे तलाश की जाये ?

चादनी रात थी । धनाई की आखें खिडकी की चौखट पर टिकी हुई थी और वह दिन भर की समस्याओ मे उलझा हुआ था ।

एकाएक खिडकी के सामने एक परछाई सी रुकी और बाहर से भीतर आता प्रकाश बन्द हो गया । तभी धनाई ने एक चमकती हुई वस्तु देखी । वह बिस्तर से नीचे गिरकर

लुढकता हुआ कमरे के एक दूर कोने मे चला गया।

इतने मे 'हिश' हुई और तभी किसी अन्य वस्तु के गिरने की आवाज भी सुनाई दी। इस वस्तु को उस बिस्तर पर फेका गया था जहा कुछ क्षण पहले वह
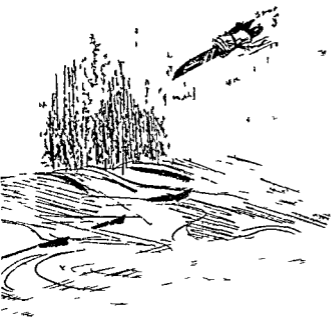
लेटा हुआ था। परछाईं हंसती हुई वहा से दूर हट गई।

धनाई ने लपक कर खिडकी मे से बाहर झाका। आसपास कोई नही था। जो भी खिडकी के पास आया था बिना कोई चिह्न छोडे चुपचाप गायब हो गया था।

धनाई ने अपने पढने की मेज पर रखा मिट्टी के तेल का लैम्प जलाया। जब उसने वहा जमीन पर पडा हुआ एक चाकू देखा तो उसका हृदय धक-सा रह गया। चाकू अपने मुट्ठे तक उसकी चारपाई के निकट फर्श की नर्म मिट्टी मे धसा हुआ था।

इसका अर्थ है कि परछाई ने निशाना उस पर नही लगाया था। इतनी कम दूरी से निशाना न लगना असभव था। धनाई ने चाकू उठा लिया। वह मुडे दस्ते वाला रामपुरी चाकू था। उसके मुट्ठे पर एक मुडा हुआ कागज बधा था। उसने कागज को खोला और पढना आरम्भ किया

> "तुम्हे चेतावनी दी जाती है कि उन कामो मे हस्त-क्षेप मत करो जिनका तुमसे कोई सबध नही है। बिना अगूठे वाले आदमी को भूल जाओ। हम दूसरी बार चेतावनी नही देगे। अगर तुम हमारी बात नही मानोगे तो हम तुम्हारा गला काट देगे।"

इस नोट पर किसी के हस्ताक्षर नही थे।

रात की परछाई

धनाई ने उठकर कमीज पहनी, चुपचाप दरवाजे का कुण्डा खोला और बाहर निकल गया।

वह बुबुल और जोन्ती के घर गया और नारियल के पेडो की छाया मे छिप गया। फिर उसने अपने मुँह मे दो उगलिया डाली और उल्लू की बोली मे आवाज निकाली।

"हू-हू, टू-टू, हू-विट!"

रात की नीरवता को उल्लू की तीखी हू-हू ने भग कर दिया। जोन्ती और बुबुल भी अभी जग रहे थे। इसलिए यह सकेत सुनते ही उन्होने भी इसका उत्तर दिया। उत्तर सुनकर धनाई ने शाति की सास ली।

इसके बाद वे दोनो भी चुपके से धनाई से मिलने के लिए बाहर निकल आये। तीनो लडको ने फुसफुसाकर कुछ सलाह की और फिर अपने अड्डे की ओर चल पडे। यह अड्डा गाव के बाहर एक बड के पेड पर था।

"मुझे चेतावनी मिली है," धनाई ने हाफ्ते हुए कहा और अपनी जेब मे से एक चाकू और एक कागज का टुकडा निकालकर दिखाया।

"हमे भी ऐसी ही चेतावनी मिली है," बुबुल और जोन्ती ने उत्तेजित होकर कहा।

चाकू एक जैसे थे और कागज पर लिखा सन्देश भी बिलकुल एक-सा था।

"लेकिन समझ मे नही आता उन्हें यह कैसे पता चला कि हमारा इस मामले मे कोई हाथ है ?" धनाई ने प्रश्न किया ।

"जरूर उन्होंने हमे तब देखा होगा जब हम नियोग मामा को गढे तक ले गये थे," बुबुल बोला, "उसके बाद हम काफी समय तक नियोग मामा के साथ रहे । इन्ही बातो से उन्होंने अन्दाजा लगा लिया होगा कि इस मामले मे हमारा हाथ है ।"

"नही, यह बात नही है," जोन्ती बोला, "इस नोट में बिना अगूठे वाले आदमी के बारे मे लिखा गया है, उसके बारे मे तो केवल हम ही जानते है ।"

"हमारे माता-पिता को भी तो इसका पता है । शायद उन्होंने गलती से ," धनाई ने आधा वाक्य ही बोला ।

"नही हमारे माता-पिता ऐसा नही कर सकते," जोन्ती ने जोर देकर कहा, "यदि किसी एक ने गलती से किसी से कह भी दिया होता तो इस सूचना को शिकार-चोरो तक पहुचने मे घटो लगते । और यह भी सोचने की बात है कि हमने उन्हे यह बात केवल तीन घटे पहले ही तो बताई थी ।"

"तब चोरो को इस बात का पता कैसे चला ?"

"कोई जादू होगा," बुबुल बीच मे बोल उठा । वह कुछ चिन्तित दिखाई दे रहा था ।

"तुम जरा चुपचाप सोचो तो अधिक अच्छा हो," जोन्ती ने क्रोधित होकर कहा ।

दोनो लडके चुप हो गये । बड के पेड की एक टहनी से सचमुच उल्लू की आवाज़ आई ।

एकाएक जोन्ती उठ खडा हुआ और बोला, "हम इतने

मूर्ख कैसे हो सकते है। बिलकुल मूर्ख ?"

"तुम कहना क्या चाहते हो ?"

"फूकन," जोन्ती बोला, 'फूकन के सिवाय और कोई नही हो सकता। उसका अवश्य किसी वाहरी सस्था से सबध हे। हो न हो इसमे उसी का हाथ हे। उसीने शिकार-चोरो को इस काम के लिए भरती किया है।"

"फूकन," धनाई ने अचरज से कहा। उसे विश्वास नही हो रहा था। "वनपालो का मुखिया ? लगता है चाद ने तुम्हे पागल कर दिया है।"

"हो न हो यही आदमी है," जोन्ती ने जोर देकर कहा। "इसके अतिरिक्त और कोई वात हो ही नही सकती।"

वुवुल ने अपना सिर हिलाकर मना किया। "मुझे इस वात पर विश्वास नही आता। तुम यह कैसे कह सकते हो कि यह केवल फूकन ही हे और कोई दूसरा नही है ?"

जोन्ती ने समझाया। "सोचकर तो देखो। हमने मान लिया कि हमारे माता-पिता ऐसा नही कर सकते। उसके वाद वस हम पाच ही रह जाते हे जिनको यह वात मालूम है। अव हम तीनो को भी अलग कर दो। उसके वाद केवल नियोग मामा और फूकन ही रह जाते हैं। नियोग मामा को हम बहुत समय से जानते हे। उनकी ईमानदारी और उनका पशु प्रेम भी किसी से छिपा नही है। वे भी ऐसा नही कर सकते। तब रह जाता है केवल फूकन।"

"फिर भी यह केवल अनुमान ही है," धनाई बोला।

"यह सच है। किन्तु आज जब हम शिकार-चोरो का

आश्रयस्थल खोज रहे थे तो तुम्हे याद है ? नियोग मामा ने स्वय हमे अलग-अलग दिशा मे भेजा था। मुझे ठीक से याद है कि फूकन को मामा ने पश्चिम की ओर जाने को कहा था। यह दिशा आश्रयस्थल के बिलकुल दूसरी ओर थी। फिर भी जब मे झोपडी पर पहुचा तो फूकन पहले से ही वहा विराजमान था।"

"यदि वह झोपडी के बारे मे पहले से नही जानता था तो उसने उसे इतनी जल्दी कैसे खोज लिया ? और हा जब मैं वहा पहुचा तो मुझे देखकर वह बहुत परेशान हो उठा था। मैंने तो सोचा कि शायद वह कुछ ढूँढ रहा है। किन्तु अब समझ मे आता है कि वह खोज का बहाना कर निशानो को नष्ट करने की कोशिश कर रहा था।"

इस आतकित करनेवाली बात को जान कर जैसे तीनो को साप सूँघ गया।

"अब हमे क्या करना चाहिये ?" धनाई बोला, "क्या हमे यह बात नियोग मामा को बता देनी चाहिए ?"

"अभी नही," जोन्ती ने कहा, "नियोग मामा को बताने से पहले हमे कुछ और प्रमाण एकत्र कर लेने चाहिए। आज रात हम फूकन के घर जायेगे और जितना हो सकेगा पता लगाने का यत्न करेगे।"

"तुम्हारा अर्थ है कि उसके घर मे चुपचाप घुसे ?" बुबुल ने पूछा।

"और क्या ? याद रखो कि हम अवैतनिक पशु रक्षक है। हमे यह पता लगाने के लिए कि शिकार-चोर कौन है सब कुछ

करने को तैयार रहना चाहिए । जरा ठहरो, अभी घटे भर बाद चलेगे । ऐसे लोग रात मे देर से सोते है । इस बीच क्यो न मखोनी को ले आये ।"

धनाई को बिना किसी तरह की आवाज किए मखोनी को लाना कठिन हो गया। फिर भी वह किसी तरह से उसे ले ही आया और तीनो उस पर सवार होकर चल पडे ।

फूकन के घर जाने के लिए उन्होने बडी सडक नही ली। रात के उस प्रहर मे हथिनी पर सवार तीन लडके जरूर देख लिए जाते। इसलिए वे पगडडियो पर से गये। पहले उन्होने एक छोटी नदी पार की और उसके बाद एक पहाडी पर चढे और फूकन के घर पहुच गये। वे हथिनी से उतरे और उसे चुपचाप खडे रहने का आदेश देकर फूकन के घर के पिछले आगन मे घुसे ।

सारे घर मे अधेरा था केवल एक कमरे मे बत्ती जल रही थी। तीनो ने खिडकी मे से झाका और देखा कि फूकन मेज के सामने बैठा कुछ लिख रहा है। फिर वह एकाएक उठ खडा हुआ । उसने एक अलमारी खोली और एक दराज का ताला खोलकर उसमे से एक चमडे का थैला निकाला। थैला काफी भारी सा दिखाई देता था। फूकन ने बिजली बुझा दी और दरवाजा खोला। तभी तीनो लडके भी दबे पाव घर के दूसरी तरफ आ गये। वहा से वे सामने का बरामदा देख सकते थे।

फूकन ने घर से बाहर निकलकर दरवाजा बन्द कर दिया। फिर उसने मुडकर चारो ओर देखा कि कोई उसे देख तो नही रहा है। उसके बाद बाहर के गेट से निकलकर वह पर्यटक

लाज की तरफ चल पडा ।

"अब कुछ और करना पडेगा," धनाई ने जल्दी से कहा, "चलो, उसका पीछा करे ।

दूसरो ने भी सिर हिलाकर अपनी सहमति प्रकट की । वे तीनो वहा से निकलकर मखोनी पर चढ गये और जरा दूर ही रहकर फूकन का पीछा करने लगे । पर्यटक लाज की मुख्य इमारत मे दफ्तर व खाने का कमरा था । इन दोनो मे वत्तिया जल रही थी । तीनो ने दूर से ही देखा कि पर्यटक रात का खाना खा रहे ह ।

फूकन बायी तरफ मुडकर एक मजिली व लम्बी इमारत मे घुम गया । यह इमारत मुख्य पर्यटक लाज का ही अग थी ।

तीनो जल्दी से एक ढलान को पार करके इमारत के बाहर की ओर पहुचे । मखोनी को उन्होने घनी छाया मे खडा कर दिया और स्वय काटेदार तारो के नीचे से घुटनो के बल सरकते हुए बगीचे मे पहुच गये । फिर उन्होने बगीचा पार किया और गुलाब की झाडियो के पीछे छिप गये ।

उन्होने देखा कि सामने की इमारत के आगे की ओर वाले गलियारे मे खूब रोशनी हो रही है । जरा-जरा सी देर बाद एक बैरा खाने का सामान कमरो मे ले जाता है । इसलिए यह सभव नही था कि कमरे के दरवाजे पर कान लगाकर भीतर होने वाली बातचीत सुनी जाय ।

इसलिए लडको ने इमारत का चक्कर काटा और उसके पीछे की ओर पहुच गये । पर पीछे की ओर की खिडकियो मे भी भारी-भारी पर्दे लटके हुए थे ।

"अब तो कोई आशा दिखाई नही देती," जोन्ती निराश होते हुए बोला।"

बुबुल बोला, "जरा ठहरो, वहा ऊपर एक रोशनदान है।"

इमारत की दो छते थी। ऊची छत टीन की चादरो की बनी हुई थी और दूसरी छत उससे कुछ फुट नीचे थी। यह कुछ बाहर निकली हुई थी जिससे वर्षा का पानी दीवार से दूर गिरे। इन दो छतो के बीच रोशनदान था।

"लेकिन बिना शोर किये हम ऊपर कैसे चढ सकते है ?"

वहा पर कोई पाइप आदि भी नही था जिससे ऊपर चढा जा सके।

"अरे घबराते क्यो हो। मखोनी तो ऊपर पहुचा सकती है," धनाई ने कहा।

तीनो वापस वही पहुचे जहा मखोनी चुपचाप खडी थी। तीनो उसकी पीठ पर चढकर बैठ गये और उन्होने फिर लॉज का चक्कर लगाया। क्योकि मखोनी के साथ वे लॉज के चारो ओर लगे तारो मे से नही निकल सकते थे। इसलिए मुख्य गेट से भीतर घुसे और इसके अलावा कोई दूसरा रास्ता नही था। लडको ने यह जोखिम उठाने का निश्चय किया। मखोनी दरवाजे मे से भीतर घुसकर इमारत के पीछे जा पहुची। धनाई के कहने पर उसने उसे सूंड मे लपेटकर छत पर रख दिया। इसके बाद वह बुबुल और जोन्ती को अपनी पीठ पर लिये गेट से बाहर निकलकर अपने पुराने स्थान पर जाकर खडी हो गई। हालाकि चौकीदार, बैरे और कई दूसरे लोग पर्यटक लॉज मे थे परन्तु किसी ने उन्हे नही देखा।

इस बीच मे धनाई टीन की चादरो पर चलकर रोशनदान के निकट जा पहुचा। धनाई के वजन के कारण टीन की चादरो के घडघडाने की आवाज आ रही थी।

"छत पर क्या है ?" कमरे मे से एक आवाज आई। धनाई दम साधकर वही खडा हो गया। उसका हृदय जोर से धडक रहा था।

"चिन्ता मत करो। हो सकता है कि कोई बिल्ली हो।" एक दूसरी आवाज ने उत्तर दिया।

धनाई ने रोशनदान मे से झाका। उसके मुह से चीख निकलते-निकलते रह गई।

फूकन एक कुर्सी पर बैठा था। एक दूसरा दाढी-मूँछ वाला डरावना आदमी मेज के दूसरी तरफ बैठा था। वह कद मे छोटा पर भारी-भरकम था। उसके हाथ मे गैंडे का एक सीग था। और दूसरे चार सीग उसके सामने मेज पर पडे थे।

"बहुत खूब। किन्तु पूरे नही हैं फूकन। ठेका तो छ सीगो का था। तुम केवल पाच लाये हो।"

"बोस साहब मुझे खेद है। मैने आपको अपनी कठिनाइयो के बारे मे लिखा था। पहले दो गैंडे मारने के बाद वन अधिकारियो ने आरक्षण का काम दुगने जोर-शोर से शुरू कर दिया है। इन पाच को पाने के लिए भी शिकार-चोरो ने बडा खतरा उठाया है।"

"यह भी कोई बात है ? हम तुम्हे इतना पैसा क्यो दे रहे है ? शिकार-चोरो के लिए रास्ता साफ करना तुम्हारा काम है।"

"यह बात ठीक है बोस साहब ! किन्तु मुझे सावधान रहना पडता है। मेरी एक गलती से मेरा भडा फूट जायेगा। वन-अधिकारी को सन्देह हो गया है कि हमारी सस्था मे से कोई आदमी विश्वासघात कर रहा है और शिकार-चोरो का साथ दे रहा है। हालाकि अभी उनका सन्देह मुझ पर नही है।"

"हा, हा, हा," दाढी वाला व्यक्ति हसने लगा। किन्तु पाच-पाच ही होते है और छ छ ही। ठेका छ का है और छ ही होने चाहिए। नही तो जो कुछ हमने तुम्हे पेशगी दिया है उसी मे तुमको सन्तोष करना होगा। बाकी पैसा तुम्हे तभी मिलेगा जब तुम अपना ठेका पूरा कर दोगे।"

फूकन उछल कर खडा हो गया। "आप ऐसा नही कर सकते बोस साहब," उसने विनती की।

"मेरा यही मतलब है, श्री फूकन जी," दाढीवाले ने बेरुखी से उत्तर दिया।

फूकन ने अपनी बची हुई प्रतिष्ठा बचाने की कोशिश की। "तब मैं ये पाचो सीग ले जाकर कोई और खरीदार ढूंढूंगा," उसने कहा।

फूकन मेज के पास गया और एक-एक करके वे पाचो सीग उठाकर अपने थैले मे डालने लगा। बोस ने अपना हाथ ऊपर उठाया। उसकी उगलियो मे पहनी हुई अगूठियो के रत्न चमक उठे।

"इन्हे यही छोड दो, फूकन। ओह, तुम मेरी बात नही सुन रहे। पर हा यह सोच लो कि अगर कोई तुम्हारे अफसर को तुम्हारी काली करतूतो के बारे मे एक पत्र लिख दे तो

क्या होगा ? इतना ही नही हम उनको विश्वास दिलाने के लिए प्रमाण भी दे मकते है।"

फूकन स्तब्ध खडा रह गया। उसने दाढी वाले आदमी पर तीखी नजर डाली। वह वहुत गम्भीर था।

फूकन गुस्से से तमतमा उठा और चिल्लाया, "ओ दुष्ट," और वह उस व्यक्ति की ओर बढा। वोस ने अपना दाहिना हाथ ऊपर उठा लिया। उसमे रिवाल्वर था। "यदि तुम एक कदम भी आगे वढे तो मैं तुम्हे गोली मार दूँगा।'

फूकन खडा हो गया। वह विलकुल सहम गया और उसके कन्धे झुक गये।

"अव ठीक है। यह याद रखो कि एक वार अपराधी जीवन मे प्रवेश करने के बाद उसमे से निकलना वडा कठिन होता है। तुम्हे पैसे की वहुत आवश्यकता है न ?"

"मै जुए मे वुरी तरह हार गया हू और दाव की रकम लेने वाले मुझे परेशान कर रहे है," फूकन ने थके स्वर मे जवाब दिया।

"जुआ ? मूर्खा का खेल ह। जुए द्वारा पैसा नही कमाया जा सकता। जुआरी जीतने से अधिक हारता है। अच्छा, अब काम की वात करे। बोलो छठा सीग कव लाओगे ?"

"मुझे डर है कि अव यह सभव नही हो सकेगा। गिरोह का नेता जो हमारे लिए काम कर रहा है उसने मुझे वताया है कि अव काम करना खतरे से खाली नही। उसने छटा सीग लाने के लिए कोशिश करने मे साफ मना कर दिया है। हो सकता है कुछ महीने वाद, वर्षा ऋतु के समाप्त होने पर

शायद कुछ सभव हो सके।"

"हम इतनी देर राह नही देख सकते। हम ने छ सीग पूर्वी एशिया के एक धनी आदमी को देने का वायदा किया है। इसीलिए हमे एक और चाहिए। यदि मैं तुम्हारे साथ शिकार-चोरो के पास चलूं तो शायद उन्हे इस बात का विश्वास दिला सकूँ कि ऐसा करना कितना जरूरी है।"

"नही, नही यह तो आ बैल मुझे मार वाली बात है। यहा वन-अधिकारी गाव मे सदेहपूर्ण स्थिति मे घूमते हुए लोगो की खोज मे है। तुम उन्हे सीधे शिकार-चोरो के पास पहुचा दोगे।"

"ऐसी स्थिति मे तुम्हे स्वय ही उन्हे विश्वास दिलाना पडेगा।"

"शिकार-चोर रहते कहा है?"

धनाई उनकी बाते बडे ध्यान से सुन रहा था। मगर फूकन की बातो से उसे बडी निराशा हुई।

"ओह, शिकार चोर कई गावो मे बिखरे हुए है। वे गैडे को मारने के लिए इकट्ठे होते है और मारने के बाद अपने-अपने गावो का रास्ता नापते हैं।"

"तब तुम उनसे सम्पर्क कैसे स्थापित करते हो?"

"हम पहले से तय किये हुये दिन चाय-बागान के निकट एक बगले मे मिलते है। लोगो का कहना है कि वह भूतहा बगला है। वर्षो से वहा कोई रहता भी नही है। इसीलिए हमारे लिए वह बहुत उपयुक्त स्थान है। हमारी आगामी बैठक कल रात नौ बजे होनी है। मैं कल उनका पूरा हिसाब चुकाने के लिए उनसे मिल रहा हू। यदि आप मुझे पैसे नही देगे तो मैं

बडी मुश्किल मे फस जाऊगा ।"

छत के ऊपर बैठा धनाई मन ही मन उत्तेजित हो रहा था। कल रात ये सब भूतहे बगले मे मिलेगे। पूरा गिरोह वहा होगा। यह सब नियोग मामा को बताना ही होगा। वे बगले को सशस्त्र वन रक्षको के साथ घेर सकते हे।

उसने देखा कि नीचे के कमरे मे दाढी वाला आदमी जरा सीधा होकर बैठ गया। और बोला, "अच्छा, फूकन मैं एक रियायत कर सकता हू। तुम्हे कल उनके पैसे देने है। मैं तुम्हे तीन सीगो की कीमत दिये देता हू और बाकी पैसे छठा सीग लाने पर दूँगा।"

"अच्छा," फूकन ने कधे उचका कर कहा, "मैं शिकार-चोरो से मिलकर बैठक का परिणाम आपको कल रात को बताऊगा।"

"मैं कल दोपहर बाद जा रहा हू। यात्री होने के नाते मुझे कल सुबह निर्धारित भ्रमण के लिए हाथी की पीठ पर घूमना होगा और मूर्ख पशुओ को ताकते रहना पडेगा। नही तो लोगो को सन्देह हो जायेगा। कल दोपहर के खाने के तत्काल बाद ही मैं वापस चल पडूँगा।"

"तब शिकार-चोरो ने क्या तय किया है, यह मैं आपको कैसे बता सकूँगा ?"

"ओह, तुम समझे नही। तुम्हारा निर्णय 'हा' मे ही होना चाहिए। हमे आर्डर पूरा करने के लिए एक और सीग चाहिए और तुम्हे किसी न किसी तरह यह छठा सीग लाना ही होगा चाहे तुम्हे स्वय ही गैडा क्यो न मारना पडे।"

दाढी वाला आदमी हसा। फूकन के सामने और कोई चारा नही रह गया था। वह बोला, "आज १५ तारीख है। मैं किसी और रूप मे २५ तारीख तक वापस आऊगा। यदि तुम मुझे तब तक छठा सीग नही दे देते तो मैं अधिकारियो को बता दूँगा कि तुम्हारी शिकार-चोरो से साठ-गाठ है।"

ऐसा कहते हुए दाढी वाले आदमी ने अपने अटैची केस मे से नोटो के कुछ बन्डल निकाल कर फूकन को दे दिये। फूकन ने नोट सावधानी से गिने और अपने खाली थैले मे रख लिये। उसके बाद वह वहा से चला गया। जिस तरह से फूकन के कन्धे झुके रहे थे उससे लगता था कि वह बेहद परेशान है।

धनाई ने कुछ मिनट राह देखी। फिर वह ऊची छत पर से फिसला और किनारे तक आ गया। उसके बाद धीरे-धीरे नीचे उतरा और जमीन पर कूद पडा।

बाधा

धनाई फुर्ती से अपने मित्रो से, जो मखोनी की पीठ पर वैठे प्रतीक्षा कर रहे थे, जा मिला और वोला, "हमे फौरन नियोग मामा के पास जाना चाहिए, जो कुछ मैंने देखा-सुना है रास्ते मे वता दूगा ।"

धनाई ने मखोनी को हाका और उसे नियोग मामा के घर की ओर जाने वाले रास्ते पर डाल दिया । छत पर बैठकर उसने जो कुछ देखा-सुना था सक्षेप मे अपने मित्रो को वताया । जोन्ती और वुवुल यह सव सुनकर आश्चर्य मे पड गये पर वहुत प्रसन्न भी हुए ।

"यह सव सुनकर नियोग मामा भी बहुत प्रसन्न होगे । उन सबके लिए हम कोई ऐसी योजना बनायेगे जिससे वे एकदम हमारे फदे मे फस जाये ।"

"शेखचिल्ली मत वनो," जोन्ती ने वुबुल को सावधान किया । "अभी तो हमने उन्हे पकडा भी नही है । हमे अपनी योजना पूरे ध्यान और सावधानी से बनानी चाहिए ।"

"अरे, अव क्या विगड सकता है," धनाई वोला, "शिकार-चोरो और फूकन मे से कोई भी नही जानता कि उनका भण्डा फूट चुका है । और इस वोस को रोकने के लिए नियोग मामा कोई न कोई तरकीब अवश्य निकाल ही लेगे ।"

नियोग मामा के घर से कुछ ही दूर उन्होने मखोनी को रोक दिया और पैदल ही आगे बढे । वहा पहुचकर गेट मे से

होकर आगन मे आ गये और फिर घर के पिछवाडे पहुचे। धनाई ने पीछे का दरवाजा खटखटाया और पुकारा, "नियोग मामा, नियोग मामा, उठो। हम है, धनाई, बुबुल और जोन्ती। एक जरूरी सूचना है। जल्दी आइए।"

पिछले आगन की बत्ती जल उठी और श्रीमती नियोग बरामदे मे दिखाई दी। उन्होंने दरवाजा खोल दिया।

"इतनी रात गये तुम सब यहा क्या कर रहे हो ?" उन्होने पूछा।

"मामी, हमे नियोग मामा से इसी समय बात करनी है। यह बहुत जरूरी है। कृपा कर उन्हे उठा दीजिए।"

"लेकिन वह तो यहा नही है। तीन घटे पहले ही वह गौहाटी गये है।"

तीनो लडके विस्मय से एक-दूसरे का मुह ताकने लगे। वे इतने चकित हुए कि उनके मुह से एक शब्द तक न निकला।

"वे आज ही शाम को गौहाटी चले गये। कुछ जरूरी काम था। उन्होंने यह भी नही बताया कि वे कब लौटेंगे।"

"यह तो अनर्थ हो गया," धनाई बुडबुडाया।

"अब हम क्या करें," बुबुल ने धीरे से कहा।

केवल जोन्ती अब भी शान्त था। "कोई रास्ता निकल ही आयेगा। हमे ऐसी कोई बात नही करनी चाहिए जिससे पता लगे कि मामा के न होने से हम पर आकाश टूट पडा है।"

"अरे हा, याद आया," नियोग मामी बोली। "जाने से पहले तुम्हारे मामा तुम सबको याद कर रहे थे। उन्होंने मुझे पूरी बात तो नही बताई परन्तु इतना कहा था कि यदि तुम

लोग उनकी अनुपस्थिति मे यहा आओ तो मैं तुम्हे बता दूं कि वे फूकन को कार्यभार सौप गये है। तुम सब उसी के पास चले जाओ।"

धनाई कुछ कहने ही वाला था कि जोन्ती ने उसे आख के इशारे से रोक दिया।

"ठीक है, मामी। हमारी सूचना कोई ऐसी नही है। हम नियोग मामा के लौट आने की प्रतीक्षा करेगे," जोन्ती ने जल्दी से कहा। "किन्तु आपको हमारा एक काम करना होगा। किसी से यह मत कहियेगा कि हम इतनी रात गये नियोग मामा से मिलने आये थे। फूकन से भी नही। आपको यह वचन देना पडेगा।"

कोई दूसरा होता तो लडको को इतना गम्भीर देखकर हँस पडता। किन्तु श्रीमती नियोग उन्हे बहुत अच्छी तरह से जानती थी। यदि वे रात को इतनी देर से आये है तो उनकी सूचना वास्तव मे ही महत्वपूर्ण होगी।

"मैं किसी से नही कहूगी," उन्होने गम्भीरता से कहा।

"एक बात और है मामी। कल सुबह नियोग मामा को फोन कर तुरन्त लौट आने के लिए अवश्य कह दीजिएगा।"

"अच्छा, गौहाटी मे वे सदा अपने भाई के यहा ठहरते है। पर वे अपने काम मे इतने व्यस्त होगे कि वे फोन पर बात कर सके यह असभव सा ही लगता है। फिर भी मैं कोशिश करूगी पर वायदा नही करती। जाने से पहले तुम लोग दूध पीते जाओ।"

तीनो ने उन्हे धन्यवाद दिया और वहा से चले गये। अब

गाव लौट जाने के अतिरिक्त उनके पास करने को कुछ नही था। वापसी यात्रा पर तीनो लडके चुप थे। वे सीधे अपने वृक्ष वाले घर पर गये और मन्त्रणा करने लगे।

बुबुल उदास होकर बोला, "यह तो सब कुछ व्यर्थ हो गया लगता है। हम शिकार-चोरो को स्वय अपने बल पर नही पकड सकते।"

"हा", धनाई सहमत होकर बोला। "नियोग मामा ने भी काजीरगा से बाहर जाने का अच्छा अवसर ढूढा!"

केवल जोन्ती हतोत्साहित नही हुआ। वह बोला, "तुम दोनो तो ऐसे बाते कर रहे हो मानो प्रलय हो गई हो। किन्तु ऐसा कुछ नही हे। अभी तक तो हमको बहुत सफलता मिली है। अब हम अधेरे मे नही है बल्कि हमे सब कुछ पता है। हमारे पास निश्चित सूचना है और हमे सावधानी से उसी के अनुरूप योजना बनानी चाहिए।"

"हम केवल योजनाये ही बना सकते है और क्या कर सकते है," धनाई ने कटुता से कहा।

"नही," जोन्ती ने जोर देकर कहा। "हम अभी और जानकारी इकट्ठी कर सकते है। कल-रात को हम शिकार-चोरो की बैठक देखेगे। हम उन्हे देख भी लेगे और उनकी अगली योजना का भी पता लग जायेगा।"

बुबुल बोला, "क्यो न हम अपने माता-पिता को बता दे। फिर वे गाव वालो को इकट्ठा करके बगले को घेर कर इस गिरोह को पकड सकते हैं।"

"यह बुद्धिमत्ता नही होगी," जोन्ती बोला, "पहले तो

गाव वालो को इस बात का विश्वास दिलाना बहुत कठिन होगा कि हम उनको बुद्धू नही बना रहे हे । फिर दूसरा खतरा यह हे कि इतने लोगो को जब पता चलेगा तो शिकार-चोरो को भी पता चल सकता हे और वे सब सतर्क हो जायेगे ।"

"तुम बिलकुल ठीक कह रहे हो," बुबुल ने सहमत होते हुए कहा। "जरूरी बात तो यह है कि नियोग मामा की अनुपस्थिति मे हमे बोस को काजीरगा से बाहर जाने से रोकना होगा । यदि वह यहा से चला गया तो पाचो सीग भी अपने साथ ले जायेगा । नियोग मामा के यहा न होने पर पुलिस भी हमारी सहायता नही करेंगी । बोस को रोकने के लिए हमे कोई योजना स्वय ही बनानी होगी ।"

"उसे हम कैसे रोक सकते है ?"

"धनाई, हमे इसी के बारे मे तो सोचना है। हमे उसे इस तरह रोकना होगा कि वह एक सामान्य दुर्घटना लगे । यदि हम कुछ ऐसा करे जिससे पुलिस बोस को रोक ले तो उससे फूकन सतर्क हो जायेगा ।"

कुछ देर सोचकर धनाई बोला, "बोस कह रहा था कि वह सुबह हाथी पर सवार होकर सचालित-यात्रा पर जायेगा । क्यो न मेरे पिता जी उसे अपने हाथी पर चढा ले और कोई दुर्घटना करा दे ।"

"नही," जोन्ती ने कहा, "हम ऐसा नही कर सकते क्योकि हर हाथी पर तीन यात्री बैठते हे । यदि बोस की दो-तीन हड्डिया टूट जाये तो मुझे परवाह नही लेकिन मै दूसरे निर्दोष पर्यटको को किसी प्रकार की हानि नही पहुचाना चाहता ।"

अब वुवुल बोल उठा, "हम उसके भोजन मे कुछ ऐसी वस्तु मिला दे कि वह एकाएक वीमार हो जाय और उसे अस्पताल मे भरती होना पडे । तभी उसका जाना रुक सकता है ।"

"हा, यह ठीक है," जोन्ती ने अपनी जाघ को थपथपाया । "वुवुल, फिर क्या करोगे ?"

वुबुल कहता रहा, "यह तो सुझाव मात्र है । अब सोचता हू कि आगे क्या करूगा । तुम्हे याद है न एक वार हमने वे काले वेर खाये थे जो आसपास उगी झाडियो पर लगे हुए है । एक दो खाने पर ही हम घटो वीमार रहे थे । हम उन्ही वेरो को एकत्र करके उनका रस निकाल लेते है । फिर मौका पाकर उसे वोस के भोजन मे मिला देगे । वह भोजन खाते ही इतना वीमार हो जायेगा कि उसे अस्पताल मे भरती होना पडेगा ।"

"हा, हो सकता है कि हमारा नुस्खा काम कर जाये," धनाई ने सहमत होकर कहा ।

"अच्छी योजना है" जोन्ती भी वोला, "किन्तु यह सब बडी सावधानी से करना पडेगा । यदि यह रस अधिक मात्रा मे मिला दिया गया तो खाने वाले की मृत्यु भी हो सकती है ।"

"ऐसा नही होगा," वुबुल बोला । "जब हम वीमार हुए थे तो मैंने गाव के वैद्य से पूछा था । उसने कहा कि इनसे पेट खराव होने और चक्कर आने के अलावा और कुछ नही होता है ।"

"यदि हम वोस को ४८ घटे के लिए वेकार कर दें तभी हमारा काम वन सकता है । और हा, शाम को हम शिकारचोरो को देखकर जान भी लेंगे कि वे सब कौन-कौन हैं ।"

नौकर ने भूत देखा

सुवह चार वजे वोस को एक वावर्दी वैरे ने जगा दिया। वोस को यह अच्छा नही लगा। वह सुवह देर से उठने का आदी था। इसलिए वैरे के जगाने पर वह वडवडाने लगा। यही कारण था कि सचालित याला पर भी सारे समय वह झल्लाया-सा रहा। जानवरो को देखकर उसके मन मे कोई प्रसन्नता नही हुई। अपनी मा के पास घूमते हुए एक नन्हे गैडे की धमाचौकडी देखकर भी उसके मुख पर मुस्कराहट की रेखा तक न दिखाई दी। इसके विपरीत दूसरे याली पेडो के बीच मे से चीते को गुजरते देखकर गदगद हो उठे। वोस को यह सब कुछ उकताने वाला लगा। याला की समाप्ति पर जब वे वापस लॉज मे आ गये तव कही जाकर उसने चैन की सास ली।

वोस अपने कमरे मे ही खाना खाता था। वह दूसरे लोगो से दूर ही रहना पसन्द करता था। सवसे पहले उसने स्नान किया फिर वैरे को बुलाकर दोपहर का भोजन और साथ मे विल भी लाने का आदेश दिया। वह अपना विल चुकाने के तत्काल बाद कार के द्वारा वहा से रवाना हो जाना चाहता था।

बैरा मुख्य इमारत मे गया और उसने लेखाकार (एका-उन्टेन्ट) को विल बनाने के लिए कहा। जव लेखाकार वोस का विल बनाने मे लगा था इसी बीच वैरा रसोई घर मे उसका भोजन लेने चला गया। उसने धनाई की ओर ध्यान नही दिया जो लेखाकार के पास ही खडा था। सफेद कपडे से ढकी

थाली लेकर बैरा फिर लेखाकार के पास आया और उनसे बिल लेकर जेब मे डाल लिया। फिर वह उस इमारत की ओर चल दिया जिसमे बोस ठहरा हुआ था।

धनाई सीधा वहा से बुबुल और जोन्ती के पास पहुचा। वे विश्राम कक्ष के एक कोने मे बैठे थे। वे उसी समय अपने काम मे लग गये।

जैसे ही बैरा उस इमारत के गलियारे मे पहुचा उसने अपने पीछे किसी के पैरो की आहट सुनी। उसने मुडकर देखा। एक लडका हाथ हिलाता हुआ उसकी ओर भागा आ रहा था।

लडका उसके निकट आकर बोला, "लेखाकार ने तुम्हे वापस बुलाया हे। जो बिल उसने अभी तुम्हे दिया है उसमे कुछ गलती रह गयी हे।"

"बाप रे, अब यह थाली लिये-लिये फिर वापस जाना पडेगा," बैरा बोला।

"इसे मुझे दे दो," लडका बोला, "मैं तुम्हारे आने तक इसे पकडे रखूगा।" वह लडका बुबुल था।

बुबुल बडी उत्सुकता से बैरे के उत्तर की प्रतीक्षा कर रहा था। जब बैरे ने उसे थाली पकडा दी तो उसने सन्तोप की सास ली। वह बोला, "तुम यही मेरी राह देखो। मैं गया और आया।"

बबुल को थाली पकडा कर बैरा मुख्य इमारत की ओर चला गया। जैसे ही वह भीतर घुसने वाला था वह सकपका कर रुक गया और अविश्वास से अपनी आखे मलने लगा। वह लडका जिसको वह अभी थाली थमा कर आया था वही अब

मुख्य इमारत से निकलकर बाहर जा रहा था।

वास्तव मे यह बाहर जाने वाला लडका जोन्ती था। वह बिलकुल बुबुल की तरह दिखाई देता था। किन्तु बैरा इस बात को नही जानता था।

"सुनो," बैरा चिल्लाया, "थाली कहा है ?"

"थाली ? कौन सी थाली ?" जोन्ती ने चकित होकर कहा।

"वही थाली, जो मैने तुम्हे पकडने के लिए दी थी।"

जोन्ती भौचक्का सा रह गया ओर वोला, "आप कैसी वाते कर रहे हैं। आखिर आप कहना क्या चाहते ह ?"

बैरा बेवकूफ था। फिर भी वह इतना तो समझ ही सकता था कि जिस लडके ने उससे थाली पकडी थी वह मुश्किल से एक मिनट बाद मुख्य इमारत के बाहर नही निकल सकता। उसने अचरज से अपना सिर खुजलाया और मुडकर फिर नई इमारत की ओर चल दिया। जैसे ही वह इमारत के नजदीक पहुचा वह और भी तेज कदमो से चलने लगा। जब उसने दूर से देखा कि लडका जहा वह उसे छोडकर गया था वहा नही है तो वह भागने लगा। लडका गायब हो गया था। किन्तु थाली बरामदे की एक मेज पर रखी हुई थी। वैरे ने सोचा कि शायद लडका खाना भी खा गया होगा इसलिए उसने थाली पर से कपडा हटाया। परन्तु चीजे ज्यो की त्यो रखी थी।

वैरे ने फिर अपना सिर खुजलाया। उसे भय लग रहा था। लडके का गलियारे मे थाली पकडकर खडा होना और फिर उसी लडके को कुछ क्षण बाद मुख्य इमारत से निकलते देखना, यह भूत-लीला ही हो सकती है। यह लडका नही था

शायद कोई आत्मा थी लेकिन एक अच्छी आत्मा जो केवल मुझसे चुहलवाजी कर रही थी।

यह सोचते हुए वैरे ने कापते हाथो से थाली उठाई और श्री वोस के कमरे मे पहुचा। फौरन वोस ने उससे विल के लिए पूछा। वैरा जेव मे से निकालकर विल देने ही वाला था कि उसे लडके की वात याद आ गई कि इसमे कुछ गलती है। वह भूत था पर लेखाकार से एक वार फिर पूछ लेने मे कोई हर्ज नही है।

यह सोचकर उसने उत्तर दिया, "मैं अभी विल लाया, साहव," कहता हुआ वह मुख्य इमारत की ओर चल दिया। वैरा भूत की खोज करने के लिए चारो ओर देखता चला जा रहा था। लेकिन उसकी एक इमारत से दूसरी इमारत तक की यात्रा मे कुछ भी खास बात नही हुई। वह झिझकता हुआ लेखाकार के पास पहुचा और पूछा, "वडे वावू, क्या आपने मुझे वापस वुलाया था क्योकि विल मे कुछ गलती थी।"

लेखाकार ने उससे विल लेकर फिर से हिसाव किया और वैरे का वापस करते हुए बोला, "इसमे तो कोई गलती नही है। तुम्हे किसने कहा कि मैंने बुलाया है?"

वैरा भयभीत हो उठा। अव उसके मन मे जरा भी सन्देह नही रहा था कि हो न हो वह भूत ही था।

"भू भू भूत, वडे वावू भूत," उसने हकलाते हुए कहा। "हा, वडे वावू। वह वहुत ही वदसूरत था, काला और डरावना। उसके वडे-वडे दात वाहर निकल रहे थे और वडी-वडी आखें थी।"

"यह तुम भूतो के बारे मे क्या बात कर रहे हो ?" पास ही कुर्सी पर बैठे एक पर्यटक ने पूछा।

"विमल ने अभी-अभी एक भूत देखा है," लेखाकार ने समझाया। "उसके लम्बे-लम्बे अग थे। टागे मुडी हुई थी।"

"तुमने भूत के हाथो को देखा था ?" एक दूसरे पर्यटक ने पूछा। वह भी भूत की बाते सुनकर इनकी ओर आकर्षित हुआ था। "क्या उसके नाखून बहुत लम्बे-लम्बे थे ?

"हा, हा, मुडे हुए लम्बे नाखून, कम से कम एक फुट लम्बे और बहुत गन्दे थे।"

"मैंने भी यही सोचा था," उस पर्यटक ने कहा। "बात यह है कि इनको अपने नाखून और बाल काटने का अवसर ही नही मिलता है। क्या उसके लम्बे-लम्बे बाल भी थे ?"

"हा, हा, उसके बाल जमीन को छू रहे थे और काली रात की तरह काले थे।"

उस समय तक बैरे के चारो ओर काफी भीड इकट्ठी हो गई थी। भूतो के कार्य और स्वभाव के बारे मे गर्मागर्म बहस हो रही थी। हर आदमी अपनी-अपनी राय दे रहा था और अपने-अपने अनुभव सुना रहा था।

आधे घटे के बाद बैरे को याद आया कि बोस साहब बिल की राह देख रहे होगे। एक दूसरे बैरे को साथ लेकर वह नई इमारत की ओर चल पडा। मुख्य इमारत मे अकेले जाने का साहस उसे नही हो रहा था।

कमरे मे घुसते ही वह भौचक्का रह गया। बोस दर्द से तडप रहा था। उसके मुह से झाग निकल रहा था और वह

हाय-हाय कर रहा था।

"भूत ने अपना प्रहार कर दिया है," कापते हुए बैरे ने कहा। "जल्दी से डाक्टर को बुलाओ।"

"क्या मैं किसी ओझा को बुलाऊ," दूसरे वैरे ने पूछा, "यदि यह काम किसी भूत का हे तो उसके लिए डाक्टर नही ओझा को बुलाना होगा।"

"ओह जिसको बुला सकते हो बुला लाओ," विमल ने कहा। अन्त मे डाक्टर समेत सभी को बुला लिया गया। डाक्टर ने वताया कि यह भूत-वूत का काम नही है। यह विषैला भोजन खाने का परिणाम है।

वोस को उसी वेहोशी की अवस्था मे स्थानीय अस्पताल मे ले जाया गया। वहा पेट मे नालिया डालकर पम्प द्वारा उसका पेट साफ किया गया। इससे जो कुछ उसने खाया था वह बाहर निकल गया।

कमरे मे जो कुछ हो रहा था उसे लडके झाडियो के पीछे छिप कर देख रहे थे।

धनाई औषधालय मे वोस का हाल-चाल पूछने गया। किन्तु जोन्ती और वुबुल छिपे रहे। उसे यह जानकर वहुत आश्चर्य हुआ कि लोगो को वोस के स्वास्थ्य की इतनी चिन्ता नही थी जितनी वदसूरत, वडे दातो वाले भूत की।

डाक्टर को भोजन के विषैले होने का कारण तो पता नही चला था किन्तु उसने निर्णय कर लिया था कि वोस को कम से कम एक दिन बिस्तर मे ही रहना पडेगा। धनाई ने वापस आकर यह समाचार अपने मित्रो को सुनाया।

"तुम दोनो भूत हो," उसने जुडवा भाइयो को बताया।

"भूत ?"

"हा, हा, भूत, निहायत बदसूरत और लम्बे गदे नाखूनो वाले भूत। बैरे और दूसरे लोगो को यह विश्वास हो गया है कि यह करनी किसी भूत की ही है।"

जुडवा भाई खुशी से नाचने लगे।

"बोस का क्या हाल है ?" बुबुल ने पूछा।

"वह कल तक बिस्तर मे नही उठ सकता। उसे तेज बुखार है और उसका पेट खराब है।"

जुडवा भाइयो की प्रसन्नता की कोई सीमा न थी। उन्होने दुश्मन पर पहला प्रहार कर दिया था।

"चलो अब चल कर नियोग मामी से मिले," जोन्ती बोला, "शायद नियोग मामा से उनकी कोई बात हुई हो।"

लडके नियोग मामा के घर की ओर चल पडे।

सकट

अपने वायदे के अनुसार श्रीमती नियोग ने सवेरे ही अपने पति को गौहाटी फोन किया था। किन्तु उनके पति परामर्श करने के लिए अपने भाई के घर से मुख्य अधिरक्षक (चीफ कन्जरवेटिव) के यहा जा चुके थे। उसके बाद जब उन्होने मुख्य अधिरक्षक (चीफ कन्जरवेटिव) के यहा फोन किया तो पता चला कि उन दोनो को राजधानी दिसपुर मे जरूरी मन्त्रणा के लिए बुला लिया गया है।

वे दिसपुर मे ऐसे किसी व्यक्ति को नही जानती थी जिसके द्वारा वे अपने पति से सम्पर्क कर सकती। उन्होने श्री नियोग के भाई के घर फिर फोन किया और यह सन्देश छोडा कि श्री नियोग के वापस आने पर वे तत्काल श्रीमती नियोग से फोन पर बात करे। उन्होने यह काम अभी समाप्त ही किया था कि तीनो लडके वहा आ पहुचे।

वे अत्यन्त प्रसन्न थे। यह जान कर भी कि मामी नियोग मामा से सम्पर्क स्थापित नही कर सकी उनका उत्साह कम नही हुआ। उनके पति ने उनको इस बात के तो काफी सकेत दे दिये थे कि लडके जगलात के महकमे के लिए काम कर रहे है परन्तु अभी यह नही जानती थी कि वे क्या काम कर रहे है। फिर भी उन्होने अनुमान लगा लिया था कि यह काम गैंडो की हत्या और शिकार-चोरो से सबध रखता है। उनकी आखो की चमक देख कर वे समझ गयी थी कि लडको को कुछ न कुछ

सफलता मिल गई है।

उन्होने मामी का खाने का निमन्त्रण अस्वीकार कर दिया किन्तु उनके दिए केक व विस्कुट खा लिए। मामी ने लडको से पूछा कि यदि श्री नियोग फोन करे या वे शाम को लौट आवें तो वह उन्हे क्या बताये?

"यदि उन्होने आपको फोन किया," जोन्ती वोला, "तो आप उन्हे सब काम छोड कर तत्काल यहा लौट आने के लिए कहिएगा। यदि वे आठ बजे रात से पहले घर आ जाये तो उन्हें हमारे गाव मे आकर हमसे मिलने के लिए कहिए। और यदि वे आठ बजे के बाद आये तो कुछ विश्वसनीय सशस्त्र आदमियो को ले कर वे चुपचाप भूतहा बगले को घेर ले। नियोग मामा इस स्थान को जानते है। बस इतना ही काफी है। किन्तु याद रखिए हमारा सन्देश केवल नियोग मामा को ही दीजिएगा और किसी को नही।"

"काश तुम मुझे कुछ और अधिक बता सकते। मैं जानना चाहती हू कि तुम तीनो लडके आखिर क्या करने जा रहे हो।"

"मामी हमे खेद है कि हम आपको कुछ नही बता सकते। नियोग मामा का ऐसा ही आदेश है। जल्दी ही आपको सब कुछ पता चल जायेगा। भूलियेगा नही। आठ बजे से पहले वे हमे गाव मे मिलें और आठ बजे के बाद भूतहा बगले पर।"

यह कहकर लडके चले गये। उसके बाद श्रीमती नियोग ने लेटने और आराम करने का प्रयत्न किया लेकिन उन्हे किसी करवट चैन नही आ रहा था। उनके माथे पर चिन्ता की रेखाये अब भी वैसे ही थी। वे सोचने लगी लडके बुद्धिमान और

होशियार हे किन्तु है तो बच्चे ही। यदि इन्हें कुछ हो गया तो वे स्वय को कभी भी क्षमा नही कर सकेगी।

वे सोचने लगी कि काश उनके पति ने इस बारे मे उन्हे अधिक बताया होता। यह तो स्पष्ट था कि लडको को सब बाते गुप्त रखने के लिए कहा गया है। लडके उन्हे अच्छी तरह से जानते थे, उन पर भरोसा भी करते थे फिर भी उन्होने उन को कुछ नही बताया। ये लडके केवल उनके पति के लिए एक सन्देश छोड कर चले गये हे। आठ बजे से पहले गाव मे और आठ बजे के बाद भूतहा बगले पर। अजीब गोरखधधा है।

वह जो पुस्तक पढ रही थी उन्होने उस पर ध्यान देने का प्रयास किया किन्तु वे सफल नही हुई। उनका मन बार-बार तीनो लडको की बातो पर चला जाता। आठ बजे से पहले गाव मे और आठ बजे के बाद भूतहा बगले पर। आठ से पहले। पहले क्यो? क्या इसलिए कि आठ बजे के बाद लडके गाव मे नही होगे? क्या वे कही जाने की योजना बना रहे है?

उन का मन तेजी से उन सब बातो पर विचार करने लगा जो लडको ने बताई थी। भूतहा बगला—सशस्त्र आदमी। ओह, हा, अब समझ मे आया। लडके आठ बजे के बाद भूतहा बगले की ओर जा रहे हे। परन्तु क्यो? शिकार-चोरो ने गैडा मारा था। शिकार चोर—भूतहा बगला—।

श्रीमती नियोग यह सब सोचकर घबरा गईं। वह चटपट चारपाई से उठी। लडके भूतहा बगले पर जा रहे हैं। उन्हे आशा है वहा अवश्य शिकार-चोर मिलेगे। तीन लडके उन दुष्ट और क्रूर आदमियो का सामना कैसे करेगे? यह बहुत ही खतरनाक

बात है।

जब वह अपने आपको सम्भाल न सकी। उन्होने लडको से वायदा किया था कि वह उनकी बात अपने पति के सिवाय किसी और से नही कहेगी। किन्तु यह समय ऐसे वायदो को पूरा करने का नही था। इस समय लडको की कुशलता के बारे मे ही सोच रही थी। उनके पति के बाहर होने पर फूकन ही वहा सब काम सम्भाल रहा था। उन्हे किसी न किसी तरह लडको को भूतहा बगले पर जाने से रोकना चाहिये। या कम से कम कुछ चौकीदार और वन-रक्षको का लडको के साथ जाने का प्रबन्ध करना चाहिये। यह सोचकर उन्होने अपने नौकर को उसी समय दफ्तर भेजा कि फौरन फूकन को बुला लाये।

फूकन पन्द्रह मिनट बाद वहा आ पहुचा। उसने श्रीमती नियोग से जैसे ही सब कुछ सुना, जो लडको ने उन्हे बताया था तो उसके चेहरे का रग फीका पड गया।

श्रीमती नियोग ने फूकन से अनुरोध किया कि वह लडको को भूतहा बगले पर जाने से रोके और यदि वे हठ करे तो वह स्वय उनके साथ कुछ सशस्त्र आदमियो को लेकर जाये।

"मैंने आपके पति से पहले ही कहा था कि इन लडको को हम लोगो के काम मे हस्तक्षेप न करने दे। किन्तु उन्होने मेरी एक न सुनी। आप जानती हैं कि यदि लडको को कुछ हो गया तो आपके पति ही उसके जिम्मेदार होगे।"

"मुझे अपने पति की चिन्ता नही है। मैं लडको के लिए चिन्तित हू।"

"अच्छा, आप चिन्ता मत कीजिए । हम उन्हे रोकने का कोई न कोई तरीका निकाल ही लेगे । अब तो कुछ न कुछ करना ही पडेगा ।"

श्रीमती नियोग से विदा लेते हुए फूकन ने मुस्कराने का प्रयास किया । पर घर से बाहर निकलते ही उसका चेहरा कठोर हो गया । उसके हृदय मे झझावात उठ रहा था । वह सोचने लगा लडको को आज साझ की बैठक के बारे मे कैसे पता चला ? क्या कोई शिकार-चोर विद्रोही हो गया है ? यदि ऐसा है तो वह आदमी इन बच्चो के पास क्यो गया । उसे सीधा श्री नियोग के पास जाना चाहिए था । वह इस उलझन को किसी तरह भी सुलझा नही सका ।

एक बात स्पष्ट थी कि यदि लडके यह बात जानते हे कि आज साझ की मीटिंग कब और कहा हो रही है तो उन्हे यह भी अवश्य पता होगा कि उसकी इसमे क्या भूमिका है । इसी बात से यह अच्छी तरह समझ मे आ जाता हे कि लडके उसके पास सहायता के लिए क्यो नही आये ।

भय और क्रोध के कारण फूकन का मुख विकृत हो उठा । अब उसके पास कोई भी दूसरा रास्ता नही था । इससे पहले कि लडके उसका भण्डाफोड करे उन्हे किसी तरह फसा कर सदा के लिए चुप करा देना होगा ।

● ● ● ●

लडके रात्रि अभियान के लिए तैयारी कर रहे थे । उन्हे यह जरा भी ख्याल नही था कि श्रीमती नियोग ने गलती से उनकी योजना दूसरो को बता दी है । सदा की तरह जोन्ती ही

इस यात्रा की योजना बना रहा था।

"हमे बगले पर जाने का रास्ता पता है," जोन्ती ने कहा। "शिकार-चोरो को पता नही है कि हमने उनके छिपने का स्थान ढूँढ लिया है। फिर भी हमे सावधानी जरूर बरतनी चाहिये। हम ऐसा करेगे कि मखोनी को बगले से तीन सौ गज दूर ही छोड देगे। फिर हम बगले पर पैदल ही पहुचेगे। वहा हम अलग-अलग होकर बगले मे भिन्न-भिन्न दिशाओ से घुसेगे। हम सूरमा बनकर शिकार-चोरो को पकडने की कोशिश नही करेगे। हम केवल उनका भेद जानने और अधिक से अधिक उनकी बाते सुनने का ही प्रयत्न करेगे। और हा उनके चेहरो को गौर से देखना मत भूलना।"

"तुमने ठीक कहा," धनाई बोला, "मेरा मतलब है बगले मे अलग-अलग घुसना। यदि हममे से एक पकडा भी जाये तो कम से कम दो तो भाग सकते हे।"

"अगर हम सावधानी से काम करेगे तो ऐसी सम्भावना नही के बराबर है। हम अपने को पकडे जाने का अवसर नही दे सकते।"

"पर हम कौन से हथियार ले और उन को कैसे ले जाया जा सकता है?" बुबुल ने पूछा।

"क्या कुदालिया लेकर चले?"

"अरे नही," जोन्ती ने कहा।

"गुलेल भी नही?" बुबुल निराश होकर बोला।

"देखो, यदि हम बन्दूक और पिस्तौल ले भी चले तो सब बेकार है क्योंकि हम उनको चलाना नही जानते।"

"सच तो है," धनाई ने सहमत होते हुए कहा, "क्यो न हम अपने चाकू साथ ले ले। शायद वे किसी आडे समय हमारे काम आये।"

"चाकू?" बुबुल ने पूछा, "हम चाकू कहा से लायेगे? हमारे पास यह मुडे हुए चाकू है जिनसे केवल सुपारी ही काटी जा सकती है।"

"तुम्हें याद नही शिकार-चोरो ने हमे दो चाकू दिए थे," धनाई बोला, "वे रामपुरी चाकू है और उनके फल इतने ही तेज हैं जितनी कि दादी की जबान।"

"यह ठीक है," जोन्ती ने सहमत होकर कहा, "किन्तु हमे पूरी सावधानी बरतनी होगी। हम चाकुओ को जेब मे नही रखेगे बल्कि धागे से बाध कर कमीज के भीतर पीठ पर लटका लेंगे। इस तरह यदि हम पकडे भी गये और हमारी तलाशी भी ली गई तो शायद उनको इनके बारे मे पता नही चलेगा।"

"सावधान, सावधान," धनाई ने चिढाया, "तुमने स्वय ही कहा था कि हमारे पकडे जाने की कोई सम्भावना नही है। अब तुम्ही इतनी सावधानी बरत रहे हो।"

"कभी-कभी परिस्थितिया आशा के विपरीत हो जाती है और सारी योजना योही धरी की धरी रह जाती है। ऐसे समय के लिये हमे तैयार रहना चाहिए। तुम और बुबुल चाकू लिए रहोगे और सुनो आठ का घटा बजते ही हम यहा से चल देंगे।"

पकडे गये

गाव की पुलिस चौकी मे आठ का घटा बजा। सारा गाव शाति से सो रहा था। तीनो लडके दबे पाव अपने-अपने घर से निकले और बड के पेड की ओर चल पडे। पेड के साथ मखोनी बधी हुई थी। थोडी देर बाद लडके भूतहा बगले की ओर रवाना हो गये।

दुर्भाग्य से यह चान्दनी रात थी। कितना अच्छा होता यदि तीनो लडके अपनी खोजबीन अधेरी रात मे कर सकते। आकाश मे बादलो के झुड मडरा रहे थे। कभी-कभी जब बादल चन्द्रमा के सामने आ जाते तो अन्धकार हो जाता। लडको को इसी अन्धेरे का सहारा लेकर आगे बढना था।

वे इस स्थान को अच्छी तरह से जानते थे और मखोनी को भी यह रास्ता पहचानने मे कोई कठिनाई नही हुई। धनाई उसका पथ-प्रदर्शन कर रहा था। वे बिलकुल चुपचाप और सतर्क होकर चले जा रहे थे। वे जरा सी आवाज सुनकर चौंक जाते। शीघ्र ही वे चाय के बगीचे मे घुसे। वहा झाडियो पर लगी चाय की पत्तिया मानो चन्द्रमा की चान्दनी मे नहा रही हो। चारो ओर से झीगुरो का गीत सुनाई दे रहा था। मुडते ही सामने भूतहा बगला दिखाई दिया।

झाडियो के बीच खुले स्थान पर भूतहा बगला खडा था। यह एक बहुत बडी इमारत थी जो उचित देखभाल न होने के कारण टूट-फूट गई थी। उसकी चिमनिया बहुत पहले ही टूट

कर गिर चुकी थी और टाइलो से बनी छत मे बडे-बडे सुराख हो गये थे। भूकम्प आने वाले क्षेत्र मे दूसरे बगलो की तरह यह बगला भी ईंटो के खम्भो पर खडा था। इसका फर्श धरती से आठ-दस फुट ऊचा था। अगला बरामदा जगली लताओ से घिरा हुआ था और आसपास छोटे बासो की बाढ विषम और ऊची-नीची थी।

लडके बगले की ओर देख रहे थे। उनके हृदय उत्तेजना और उत्सुकता से धक-धक कर रहे थे। यद्यपि इस बगले मे कोई भी नही रहता था फिर भी उसके एक कमरे से तेज़ रोशनी बाहर आ रही थी।

जोन्ती की त्योरिया चढ गई। कही कुछ गडबड अवश्य है। परन्तु उसके पास सोचने के लिए अधिक समय नही था। उसी समय चन्द्रमा के सामने एक बादल आ जाने से अधेरा हो गया।

"जल्दी करो," मखोनी की पीठ पर बैठे दोनो साथियो के कान मे जोन्ती फुसफुसाया। "इस बादल के हटने से पहले ही हमे बगले पर पहुच जाना चाहिए।"

वे तीनो जल्दी से मखोनी की पीठ पर से उतरे ओर भाग कर बगले तक पहुच गये। वे छोटे-छोटे बासो के झाड के पीछे छिप गये और वहा से जोन्ती ने दोनो साथियो को समझाना आरम्भ किया।

"धनाई, तुम सामने के कुछ भाग और बगले के दाहिनी तरफ का ध्यान रखोगे। बुबुल, तुम बगले के बायी तरफ के सामने का भाग और बायी तरफ का जिम्मा सम्भालो। मैं पीछे

की ओर से जाता हूँ।"

"किसी तरह बगले मे घुसने का प्रयत्न करो। लेकिन सावधान और सतर्क रहना। ज़रा सी गलती हुई कि हम सबको जान के लाले पड जायेंगे। आधे घटे बाद हम सबको वापस मखोनी की पीठ पर होना चाहिए।"

जोन्ती धीरे-धीरे दबे पाव बगले के पीछे की ओर जाने लगा। उसकी आखे तेजी और सावधानी से इधर-उधर देखती हुई इमारत मे घुसने का रास्ता ढूँढ रही थी। वह मेड के पीछे झुक कर आकाश को देखने लगा। बादल चाद के ऊपर से दो क्षण मे दूर हट जायेगा। इतने ही समय मे उसे अहाता पार कर बगले मे घुस जाना होगा। उसने एक ही दृष्टि मे पिछला आगन और रसोईघर की ओर जाती हुई सीढी देख ली। अब बिना हिचके वह पलक झपकते ही अहाता पार कर सीढिया चढने लगा। जोन्ती एकाएक रुक गया।

पहली बार जब उन तीनो ने दूर से बगला देखा था तभी से वह मन ही मन सोच रहा था कि वहा कुछ गडबड अवश्य है। उसने सोचा कि यह तेज़ रोशनी नही होनी चाहिए थी। यही गडबड थी। सब जानते थे कि बगले मे कोई नही रहता। शिकार-चोर बिलकुल मूर्ख होगे यदि वे ऐसी रोशनी करेंगे जो बाहर से दिखाई दे। और आगन्तुको को भीतर आने का निमन्त्रण दे। जब वह सीढी चढ रहा था तो ये सब विचार उसके मन मे कौंध गये। वह लौट पडा और सीढियो से नीचे उतरने लगा। उसकी अन्तरात्मा ने उसे मुडने के लिए प्रेरित किया था। दो चार सीढिया उतरते ही उसने देखा कि एक भारी

भरकम परछाई ऊपर चढ रही है और उसके भाग निकलने का रास्ता बन्द हो गया है।

उसी समय चन्द्रमा बादलो के पीछे से बाहर आ गया और चादनी मे जोन्ती ने अपने शत्रु को ठीक से देखा। उस भारी भरकम व्यक्ति के चेहरे पर क्रूर मुस्कान थी। तभी जोन्ती ने मुडकर ऊपर की ओर देखा जहा एक दूसरा मोटा तगडा व्यक्ति खडा था। वह नीचे की ओर आ रहा था।

"भागो, भागो, धोखा हुआ, भागो," जोन्ती की ऊची आवाज ने रात की नीरवता को छिन्न-भिन्न कर दिया। और फिर वह ऊपर चढने के लिए सीढियो मे सहारे के लिए बने जगले के ऊपर से नीचे कूद पडा। भाग्य से वह अपने दोनो हाथो व दोनो पैरो पर गिरा और उसे चोट नही लगी।

जोन्ती की इस छलाग से ऊपर और नीचे खडे दोनो आदमी घबरा कर चिल्लाने लगे। जहा जोन्ती गिरा था वही एक आदमी खडा था। यदि वह वहा न खडा होता तो वह नौ-दो ग्यारह हो जाता। इस व्यक्ति ने वहा पडी एक टूटी कुर्सी उठा ली और फुर्ती से जोन्ती के सिर पर दे मारी। जोन्ती लडखडा कर वही जमीन पर गिर पडा।

ठीक इसी समय बगले के बाई ओर से बुबुल एक नाली के पाइप् के सहारे इमारत पर चढ गया और एक खुली खिडकी से होकर भीतर घुस गया। वह दबे पाव चर-चर आवाज करते हुए फर्श को पार करने ही वाला था कि दो शक्तिशाली हाथो ने उसे कस कर पकड लिया। जोन्ती की चेतावनी सुनने से पहले ही उसके हाथ-पैर बध चुके थे और मुह मे कपडा ठूसा जा

चुका था। वह अब बिलकुल असहाय था।

दायी दिशा मे धनाई बराबर चल रहा था। अन्धकार मे वह एक सुरक्षित स्थान से दूसरे सुरक्षित स्थान की तरफ फुर्ती से दौडता हुआ जा रहा था पर उसे बगले मे घुसने का कोई स्थान नही मिल रहा था। वह सोच ही रहा था कि क्या करे कि ठीक उसी समय चाद बादलो से बाहर आ गया और चारो ओर उजाला हो गया। धनाई ने लपक कर बगले के फर्श के नीचे एक ईंटो के खम्भे के पीछे आश्रय ले लिया। कुछ ही देर बाद उसे जोन्ती का चिल्लाना सुनाई दिया।

धनाई धरती पर लेट गया। तभी निगरानी करते हुए एक और आदमी ने एक लकडी का तख्ता घुमा कर धनाई के सिर पर मारना चाहा। पर वह बिना कोई हानि किए धरती पर धम से जा गिरा। धनाई पहले ही फुर्ती से वहा से दूर सरक गया था। आदमी अपना सन्तुलन खो बैठा और धडाम से गिर पडा। इससे पहले कि वह अपने को सम्भाल पाता धनाई ने पास पडी ईंट उठा कर उसके सिर पर दे मारी।

फर्श के नीचे घोर अधेरा था। धनाई ने दूसरी ईंट उठाई ही थी कि एक दूसरे व्यक्ति ने बटन दबा कर एक तेज टॉर्च जलाई। उसका प्रकाश पहले धरती पर पडी आकृति पर पडा और फिर टॉर्च धनाई की खोज मे ऊपर घूमी। धनाई ने हाथ मे पकडी ईंट को पूरी शक्ति से टॉर्च की ओर फेका। एक दर्द भरी "हाय" निकली और वह व्यक्ति धरती पर लोटपोट हो गया। टॉर्च उसके हाथ से छूट कर नीचे गिरी और बुझ गई।

"अब और प्रतीक्षा करना खतरनाक होगा, धनाई ने

सोचा और वह सिर पर पाव रख कर भागा । उसे अपने पीछे कुछ मिलीजुली आवाजे सुनाई दे रही थी। उन से उसे मालूम हुआ कि जोन्ती और बुबुल पकडे गये है । वह आखे बद किए भागता ही गया । बगले से काफी दूर निकल जाने पर वह अपनी दिशा जानने के लिए जरा सा रुका । रात के समय बगीचे के सब रास्ते एक से दिखाई दे रहे थे और उसे लगा कि वह अधेरे मे खो गया है । उसके पास इतना समय नही था कि मखोनी की खोज करे। इसलिए उसने अपने मुह मे दो उगलिया डाल कर सीटी बजाई । मखोनी वही कुछ गज दूर अधेरे मे मूर्तिवत खडी थी । सीटी की आवाज सुन कर वह जल्दी से वहा आ गई जहा धनाई खडा था । यह देखकर इतने तनाव मे भी वह मुस्करा उठा ।

"दौड, मखोनी दौड," मखोनी की पीठ पर चढते हुए वह चिल्लाया । मखोनी गाव की ओर दौडने लगी ।

जैसे ही शिकार-चोरो को पता लगा कि एक लडका भाग गया है उनमे खलबली मच गई । उन्होने जल्दी से दोनो घायल आदमियो को उठाया । एक की नाक मे चोट आई थी । दूसरे के सिर मे गुमडा बन गया था और दोनो बेहोश थे ।

"मूर्खो ने सब घपला कर दिया," शिकार-चोरो के नेता ने घृणा से थूकते हुए कहा । "उन्होने उस छोटे से लडके को यह सब करने दिया ।"

"इससे पहले कि वह गाव वालो या अधिकारियो से सपर्क स्थापित कर सके, हमे उसे किसी भी तरह पकडना होगा, मुनिया," फूकन फुसफुसाया ।

मुनिया ने पूछा, "क्या ये लडके यहा किसी प्रकार के वाहन से आये थे ?"

यही आदमी नेता था और उसके पैर का अगूठा गायब था।

"हा, शायद। वे सदा हाथी पर चलते ह।"

"अभी समय है, यदि हम तुम्हारी जीप का उपयोग करे तो उसको पकड सकते है।"

"चलो तुम सब जीप मे बैठ जाओ। इन चारो को पिछली सीट पर डाल दो। पहले इन लडको की तलाशी ले लो।"

एक शिकार-चोर ने लडको की तलाशी ली किन्तु उसे कोई हथियार नही मिला। तब उन्होने जोन्ती, बुबुल और दो बेहोश आदमियो को पिछली सीट पर डाल दिया। फिर वे सब सिकुड कर आगे और पीछे बैठ गये। वे सब मिलाकर नौ व्यक्ति थे।

फूकन ने जीप तेजी से गाव की ओर मोड दी। रास्ते मे उसे न हाथी मिला और न धनाई ही। गाव पहुचने स पहले उसने दो शिकार-चोरो को जीप से उतार दिया और मुनिया ने चलने से पहले उनसे कहा, "केवल चाकू का ही उपयोग करना। यह याद रखना। बन्दूके किसी हालत मे भी नही चलाना। हम सारे गाव को जगाना नही चाहते। उसको जीवित पकडने के लिए अपना समय नष्ट मत करना।"

वे श्री नियोग के घर की ओर चल पडे और करीब तीन सौ गज की दूरी पर ही रुक गये। नेता सहित अन्य आदमी भी जीप पर से उतर गये।

मुनिया ने फूकन से पूछा, "तुम जानते हो न कि इन्हे कहा ले जाना है ?"

"हा," फूकन ने उत्तर दिया।

"इन दोनो बेहोश मूर्खों को पानी मे डुबकी देना और कहना कि दोनो लडको की निगरानी करे। फिर जितनी जल्दी हो सके वापस आ जाना।"

फूकन ने जीप मोड कर आरक्षित वन का रास्ता लिया। जीप के ऊबड-खाबड सडक पर उछलने से बुबुल दर्द के मारे तडप रहा था। पन्द्रह मिनट बाद जीप रुक गई। फूकन एक डिब्बा लेकर नीचे उतरा। वह पास की झील से पानी ले आया और उन दो बेहोश आदमियो के मुँह पर डाला। दोनो चोर हिचकी लेते हुए और हाय-हाय करते होश मे आ गये। उनकी सहायता से फूकन ने जोन्ती और बुबुल को जीप से बाहर निकाला और उन्हे घसीटते हुए झाडियो के झुण्ड की ओर ले गये।

बुबुल ने उस स्थान को फौरन पहचान लिया। यह वही झोपडी थी जिसका उपयोग चोरो ने गैंडो को मारते समय किया था।

यह योजना एक तेज दिमाग व्यक्ति की थी। यदि धनाई गाववालो या अधिकारियो के पास पहुच भी जाता है तो वह उनके इस स्थान पर होने की कल्पना तक नही कर सकता।

चोरो ने दोनो लडको को झोपडी के अदर एक कोने मे फेक दिया। उसके बाद फूकन ने चोरो को कठोर आदेश दिया, "इन दोनो लडको पर कडी निगाह रखना। यदि ये छूट कर भागना चाहे तो तत्काल गोली मार देना," उसने कठोरता से कहा और चला गया।

बुबुल ने जोन्ती की तरफ देखा। शायद वह इस मुसीवत से बच निकलने का कोई रास्ता निकाल सके। किन्तु जोन्ती की आखें बन्द थी और वह अभी भी बेहोश था।

एक भयानक रात

श्रीमती नियोग सारा दिन वहुत चिन्तित रही। उनके पति ने उन्हे फोन भी नही किया था। इसलिए वह और भी परेशान थी। फूकन और लडको का भी कोई समाचार नहीं मिला था। दस वजे फोन की घटी वजी। उन्होने लपक कर फोन उठाया। फोन उनके पति का था।

"क्या यह तुम हो?" भरोसा दिलाती हुई उनके पति की आवाज आई, "भाई साहव कह रहे थे कि तुमने मुझे फोन किया था। मैं राजधानी से अभी-अभी लौटा हू। क्या कोई जरूरी वात है?"

श्रीमती नियोग ने वहुत सक्षेप मे सव स्थिति उन्ह वता दी। "मैंने फूकन को लडको के साथ जाने के लिए कहा था। शाम को उसके घर भी पुछवाया। उसके नौकर ने कहा कि फूकन एक घटा पहले ही निकल गया है। और वह अपने साथ किसी को नही ले गया और न ही वह अव तक वापस आया है। मैं वहुत परेशान हू।"

"परेशान होने की आवश्यकता नही। फूकन लडको को कोई मूर्खतापूर्ण कार्य नही करने देगा। मुझे कल कुछ और काम है। मैं कल शाम तक ही घर लौट सकूंगा।"

"नही, नही, तुम आज ही रात को लौट आओ। तुम मुझे जरूर मूर्ख कहोगे किन्तु मुझे किसी खतरे की आशका हो रही है। यह आशका मुझे सारा दिन ही होती रही है। यह देखलो

कि यदि लडको को कुछ हो गया तो तुम अपने को कभी भी क्षमा नही कर सकोगे।"

"परन्तु फूकन " श्री नियोग ने कहना शुरू किया ही था कि उनकी पत्नी ने उनके वाक्य को यह कह कर काट दिया "कृपा कर के एक बार मेरी भी बात मान लो। आज ही रात लौट आओ। केवल चार घटे का सफर ही तो है।"

"अच्छा ठीक है," श्री नियोग ने अनिच्छापूर्वक कहा, "मैं अभी यहा से चल पडता हू। और अधिक परेशान मत होओ। लडको को कुछ नही होगा।"

श्रीमती नियोग ने चैन की सास ली। उनके कधो से जिम्मेदारी उतर गई थी। उनके पति को यहा पहुचने मे कुछ समय लगेगा। वह लेट गई और सोने का प्रयत्न करने लगी।

● ● ● ●

मखोनी इतनी तेजी से पहले कभी नही दौडी थी। धनाई की योजना थी कि गाववालो को जगा कर जोन्ती और बुबुल को बचाया जाय। नियोग मामा अभी गौहाटी से वापस नही आये थे इसलिए वहा जाना बेकार था।

उसने गाव जाने का सीधा रास्ता लेने के बजाये लम्बा रास्ता लिया। उसको पता था कि यदि उसने सीधा रास्ता लिया तो शिकार-चोर उसको पकडने का प्रयत्न अवश्य करेंगे।

इस समय चादनी रात उसकी सहायक हो रही थी। चाद की चादनी मे उसे सब कुछ साफ दिखाई दे रहा था। रास्ते मे उसे कोई नही मिला लेकिन जब वह गाव से एक फरलाग रह गया तो मखोनी ठिठक कर रुक गई। इससे पहले वह बहुत

तेज गति से चलती आई थी। धनाई ने उसे प्यार से आगे बढाने का यत्न किया किन्तु मखोनी आगे नही बढी और चिघाडने लगी।

मखोनी के इस व्यवहार से चेतावनी पाकर धनाई ने रास्ते को अच्छी तरह् से देखा। चाद की चान्दनी मे उसे किसी हथियार की चमक दिखाई दी। उसने चोरो को रास्ते के पास झाडी के पीछे छिपे हुए देखा।

धनाई ने फौरन मखोनी को मुडने का आदेश दिया। किन्तु भारी भरकम मखोनी के लिए इतने तग रास्ते मे मुडना इतना आसान नही था। इससे उनका कुछ अमूल्य समय नष्ट हो गया। उसके मुडने से चोरो को भी पता लग गया कि उन्हे देख लिया गया है। अब वे अपने छिपने के स्थान से बाहर निकल कर हथिनी और उसके सवार के पीछे भागे। चोर उनके बहुत निकट आ गये थे। धनाई चिल्लाया, "दौड, मखोनी दौड," और वह स्वय मखोनी की पीठ पर लेट गया।

शिकार चोरो ने उस पर लम्बे फलक वाला चाकू फेका था जो सर्राटे से उसके सिर के पास से निकल गया। उसका सिर केवल कुछ इचो से ही बच गया था। यदि कही वह बैठा होता तो चाकू निशाने पर ठीक बैठता। दूसरे चोर ने चाकू को कुछ निचाई पर फेका। धनाई ने चाकू गिरने की आवाज सुनी और साथ ही मखोनी की दर्द भरी चिघाड भी। चाकू हवा को चीरता हुआ मखोनी के शरीर मे जा लगा था।

मखोनी तेजी से दौडती हुई काफी आगे निकल गई। पीछा करने वाले चोरो ने उसका पीछा करना छोड दिया।

धनाई को पता था कि शिकार-चोर बन्दूके भी रखते हैं। उसने मन ही मन उनका धन्यवाद किया कि उन्होने बन्दूको का प्रयोग नही किया था। धनाई और मखोनी अभी गाव से बहुत दूर थे लेकिन धनाई ने मखोनी को रोककर उसके शरीर मे धसा हुआ चाकू निकाला। उसकी चोट गहरी थी और खाल कट गई थी। परन्तु खून अधिक नही निकला था।

धनाई नीचे उतरकर 'काचू' नाम की एक जडीबूटी ढूंढने लगा। शीघ्र ही उसे काचू का एक पूरा गुच्छा का गुच्छा मिल गया। उसने झटपट उसे चाकू से काटा और पत्थर पर कुचल कर मखोनी के घाव पर लगा दिया, इससे खून बहना बन्द हो गया। फिर घाव को बाये हाथ से दबा कर उसने मखोनी को आगे बढाया।

तभी उसे लगा कि वह बहुत अकेला व असहाय है। वह अपने लोगो के पास तक नही पहुच सकता क्योकि शिकार-चोर गाव मे जाने वाले रास्ते की निगरानी कर रहे थे। उसके मित्र चोरो के हाथ मे थे। वह यह भी नही जानता था कि वे जीवित भी है या नही। नियोग मामा गौहाटी गये हुए थे। केवल रह गई थी नियोग मामी। उसने मखोनी को नियोग मामी के घर की तरफ मोड दिया। वह बडी सडक छोडकर पगडडी के रास्ते से आगे बढने लगा।

जैसे ही उसे घर दिखाई दिया धनाई ने मखोनी को वही रोक लिया और बडी सावधानी और सतर्कता से घर की तरफ देखने लगा। उसने घर के चारो ओर नजर दौडाई सब कुछ सामान्य लग रहा था। घर मे अधेरा था। निश्चय ही नियोग

मामा अभी गौहाटी से वापस नही आये है। यदि वे आ गये होते तो घर मे खूब हलचल होती। लेकिन शायद नियोग मामी दूसरो से सम्पर्क स्थापित कर के उसके मित्रो को बचा सकें।

यद्यपि सारा वातावरण वैसा का वैसा ही था फिर भी वह सतर्क था। हो सकता है शिकार-चोर इस घर पर भी नजर रखे हो। वे यह भी अनुमान लगा सकते है कि शायद मैं नियोग मामी से सम्पर्क स्थापित करने का प्रयास करूगा। उसने फिर भी मखोनी को बैठने के लिए कहा और वह बैठ गई।

सहसा वातावरण बदल गया। मखोनी ने हवा को सूघा और घबराहट से चिघाडी।

धनाई को मखोनी की अन्त प्रेरणा पर बडा भरोसा था। उसने समय नष्ट नही किया। उसे कोई दिखाई तो नही दिया फिर भी उसे पूरा विश्वास था कि कोई न कोई उसका सब कार्य देख रहा है। हिम्मत से उसने मखोनी को मोडा और उसे भागने के लिए कहा।

तभी उसने एक जीप की आवाज सुनी। मखोनी की गति तेज होने लगी। उसने जीप की बत्तिया देखी और मखोनी को बडी सडक से हटाकर कच्चे रास्ते पर मोड लिया। जीप सीधी ढलान उतर कर नदी की ओर जाने लगी। जब जीप नीचे उतर रही थी तो उसका प्रकाश उसे दिखाई दिया। धनाई की योजना का अनुमान लगा कर जीप दूसरी ओर मुडी और एक पगडडी द्वारा नदी की ओर जाने लगी। जीप उसी का पीछा कर रही थी।

यह सोच कर कि उसका रास्ता बन्द हो जायेगा धनाई

ने पगडडी छोड दी । वह मखोनी को फिर बडी सडक पर ले आया । जब तक शिकार-चोरो को अपनी भूल का पता चला धनाई को कुछ अमूल्य समय मिल गया । उसने सोचा कि मखोनी जीप का मुकाबला नही कर सकती । उसे किसी तरह अपने पीछा करनेवालो से पीछा छुडाना ही होगा और यह काम केवल आरक्षित वन मे ही अधिक अच्छी तरह से हो सकता है । झटपट धनाई ने मखोनी को आरक्षित वन की तरफ बढाया ।

जब वे अवलोकन मीनार को पार करके लबी घास मे घुसे तो जीप की बत्तियो ने उन्हे फिर पकड लिया । जीप गरजती हुई उनके पीछे आई और अवलोकन मीनार के पास आकर खडी हो गई ।

उसमे से एक चोर उतरकर मीनार पर चढ गया । वहा से ऊची-ऊची घास मे चलती मखोनी साफ नजर आती थी । मखोनी को देखकर वह व्यक्ति भाग कर जीप मे वापस आया एव जीप आगे बढाने का आदेश दिया । जीप फिर उनके पीछे चल पडी ।

धनाई को पता चल गया था कि मखोनी थक रही है और यह चूहे-बिल्ली का खेल अब बहुत देर नही चल सकता । अब केवल यही सम्भावना थी कि वह अपने पीछा करने वालो को धोखा दे । धनाई ने यह खतरा मोल लेने का निश्चय कर लिया ।

उसने मखोनी को उस रास्ते पर मोड दिया जो आरक्षित वन के बिलकुल भीतर तक जाता था । उसने मखोनी की पीठ

थपथपाई। उसे स्नेह भरे शब्द कह कर चलने के लिए उत्साहित किया। जब वे एक बडे पत्तो वाले पेड की झुकी डाल के नीचे से निकले तो धनाई ने पेड की डाल को पकड कर अपने को मखोनी की पीठ पर से उठा लिया। मखोनी बराबर भागती रही और पीछा करने वाले उसका पीछा करते रहे और धनाई से दूर होते चले गये।

धनाई सास रोके तब तक चुपचाप बैठा रहा जब तक उसे विश्वास नही हो गया कि शिकार-चोर उससे बहुत दूर गलत रास्ते पर जा चुके हैं। वह टहनी से नीचे उतरा और खूब तेजी से दौडने लगा। वह कभी ऊबड-खाबड धरती पर फिसल जाता, कभी गिर पडता, पर फिर भी वह बराबर दौडता चला गया। उसके बदन से पसीना चू रहा था और वह बुरी तरह से हाप रहा था। उसे ऐसा लग रहा था मानो उसका हृदय फट जायेगा फिर भी वह तब तक बराबर भागता रहा जब तक नियोग मामी के घर नही पहुच गया। वह इतना थक गया था कि उसने कोई सावधानी नही बरती। वह लडखडाता हुआ वहा पहुच ही गया और अपनी बची हुई सारी शक्ति बटोर कर उसने घटी बजाई। उसकी आखो के सामने अधेरा छा गया और उसे धुधला सा दिखाई दिया कि दरवाजा खुल गया है और पसीना टपकने से बन्द आखो से ही उसने पहचाना कि नियोग मामी बाहर आ गई है।

"नियोग मामी, नियोग मामी, उन्होने बुबुल और जोन्ती को पकड लिया है," कहता हुआ वह वही जमीन पर गिर कर बेहोश हो गया।

आरक्षित वन मे

जिस झोपडी मे वुबुल और जोन्ती लेटे हुए थे उसकी छत मे एक सुराख था। उसमे से चन्द्रमा की किरणे झोपडी के भीतर पहुच कर उसे प्रकाशित कर रही थी। जोन्ती और बुबुल झोपडी के एक अधेरे कोने मे पडे थे। इस झोपडी मे एक ही दरवाजा था और उसके आगे दो पहरेदार बैठे थे।

बुबुल असहाय सा फर्श पर लेटा हुआ था और उसकी पीठ जोन्ती की तरफ थी। उसे ऐसा लगा कि उसकी पीठ किसी ने छुई। एक क्षण वह डरा। किन्तु अगले ही क्षण उसके मन मे आशा जन्मी क्योकि जिन उगलियो ने उसे छुआ था वे जोन्ती की थी।

उनकी कलाइया रस्सी से वधी थी किन्तु उनकी उगलिया खुली थी। जोन्ती वुबुल की कमीज़ के नीचे वधे चाकू तक पहुचने की कोशिश कर रहा था। उसने अधेरे का लाभ उठाया और अपने शरीर को मोडकर ऐसी स्थिति मे आ गया कि वह अपनी उगलियो से उसकी पीठ छू सकता था। उसकी उगलिया चाकू तक पहुचने का प्रयत्न कर रही थी।

यह सब कुछ बहुत धीरे-धीरे हो रहा था क्योकि कलाई वधने से खून की कमी से उगलिया बिलकुल सुन्न हो गई थी। बहुत कठिनाई से जोन्ती ने वुबुल की कमीज़ नेकर से वाहर खीच ली। उसने कोशिश कर के वुबुल की पीठ पर बधा चाकू हाथ मे पकड लिया। चाकू वधा हुआ अभी भी वुबुल के गले मे

लटका था। जोन्ती ने चाकू को जितनी दूर जा सकता था खींच लिया और अपने अगूठे व उगलियो से उसका मूठ पकड लिया और वटन दबा दिया। उसका फलक खटके से बाहर आ गया।

आवाज से चौकीदारो की कुछ प्रतिक्रिया होती है या नही उसकी प्रतीक्षा जोन्ती वडी उत्सुकता से करने लगा। किन्तु दोनो पहरेदार अपना-अपना रोना रोने मे लगे थे। एक की नाक टूट गई थी और दूसरे के सिर मे चोट आई थी।

जोन्ती ने चाकू को ऊपर उठाकर धरती मे गाड दिया। वह अधिक जोर तो नही लगा सका किन्तु इतना अवश्य हो गया कि चाकू सीधा खडा हो गया और उसके फलक का कुछ भाग धरती के ऊपर रहा। उगलियो से छूकर वह जान गया कि चाकू ठीक स्थिति मे है। उसके बाद वह अपनी कलाई की रस्सी को धीरे-धीरे चाकू के फलक से घिसने लगा।

कई बार हाथ फिसल जाने से चाकू उसकी त्वचा मे भी घुस गया। इस डर से कि दर्द के कारण उसके मुह से चीख न निकल जाये उसने अपने होठो को कस कर भीच लिया। उसके कधे और पीठ की मासपेशियो मे दर्द होने लगा था और वह पसीना-पसीना हो रहा था। फिर भी जोन्ती अपने हाथो को बार-बार ऊपर नीचे करता रहा। मानो वह घटो की यातना हो। लेकिन रस्से के तन्तु आखिर टूट ही गये और उसके हाथ खुल गये। अब उसकी उगलियो मे रक्त सचार होने के कारण झनझनाहट सी होने लगी।

जोन्ती ने जल्दी-जल्दी अपने पैरो की बधी हुई रस्सी भी काट दी। उसके बाद उसने बुबुल के बन्धन काट दिये। किन्तु

छू कर सकेत किया कि वह वैसा ही पडा रहे। वुबुल के शरीर की आड मे जोन्ती ने अपना सिर झोपडी की दीवार की तरफ मोडा। उस झोपडी की दीवारे घास की वनी हुई थी। धीरे धीरे उसने चाकू से दीवार को काटना आरम्भ कर दिया।

● ● ● ●

आरक्षित वन मे शिकार-चोर धनाई का पीछा कर रहे थे। वे नही जानते थे कि धनाई उन्हे धोखा देकर खिसक गया है। वे बरावर मखोनी द्वारा छोडे गये निशानो का पीछा करते रहे। मखोनी उन्हे घने वन मे ले गई जहा उन्हे जीप छोडकर पैदल ही उसका पीछा करना पडा। कभी-कभार घास मे से भागती हुई मखोनी की एक अस्पष्ट सी झलक ही उनको मिल जाती थी। अव मखोनी की चाल भी पहले से धीमी हो गई थी। चादनी के कारण उनकी आखो को भ्रम हो रहा था और उन्हे यह नही पता चल सका कि हथिनी बिना सवार के है।

जैसे-जैसे समय बीतता जाता था वैसे-वैसे फूकन और शिकार-चोरो का नेता निराश होते जाते थे। उनके लिए यह वहुत आवश्यक था कि धनाई को पकड लिया जाय क्योकि वही एक व्यक्ति था जो फूकन को पहचानता था और उसको फसा सकता था।

मखोनी अब थक गई थी। रात उमस भरी थी और वह प्यासी थी। जहा तक हो सका वह हिम्मत करके चलती रही थी किन्तु अब बिना पानी पिये उसके लिए आगे वढना कठिन था। वह रुकी और अपनी दिशा बदल कर झील की ओर चल दी। जब फूकन और उसका गिरोह वहा पहुचा तो मखोनी

पानी मे घुसी हुई सूड से अपने शरीर पर पानी उछाल रही थी। पर धनाई का कही पता नही था।

"चालाक कही का," मुनिया क्रोध से चिल्लाया, "वह हमे धोखा दे गया।" "चलो, अब समय नष्ट न करो," फूकन बोला, "वह नियोग के घर की तरफ ही गया होगा। उसे वहा पहुचने से पहले ही पकड लेना चाहिए।"

वे जल्दी-जल्दी आरक्षित वन को पार कर के वहा पहुचे जहा उन्होने जीप छोडी थी। उन्हे जीप तक पहुचने मे काफी समय लग गया। वहा पहुचकर जब उन्होने जीप चलानी चाही तो वह स्टार्ट नही हुई क्योकि उसका पैंट्रोल समाप्त हो चुका था। फूकन ने जीप के एक तरफ लटका हुआ पैंट्रोल का डिब्बा उतारा और जीप मे पैंट्रोल डाला। और वे जल्दी से चल पडे।

● ● ● ●
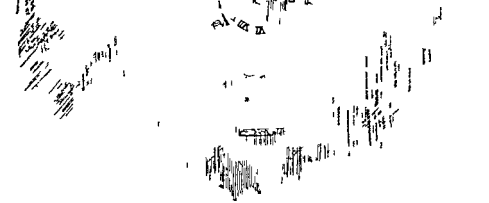
धनाई के अकस्मात आने से श्रीमती नियोग चौक उठी पर उन्होने जल्दी ही अपने को सभाल लिया और घर के नौकर और रसोइये को जगाया। नौकरो ने वेहोश धनाई को उठा कर चारपाई पर डाला। एक ने उसके कपडे ढीले किये और ताड के पत्ते से वने पखे से हवा करने लगा। रसोइये ने धनाई के मुह पर पानी के छीटे मारे और माथे पर गीला कपडा रखा। आधे घटे मे धनाई को होश आ गया।

उसने सक्षेप मे उन्हे सारी कहानी कह सुनायी। जब उसने बताया कि फूकन शिकार-चोरो से मिला हुआ है तो श्रीमती नियोग का चेहरा पीला पड गया और उन्होने भय से भरी एक लम्बी सास ली।

"हे भगवान," उन्होने सोचा, "यह मैंने क्या कर दिया? लडको की सहायता करते-करते, मैंने स्वय ही उन्हें शैतान के हाथो मे साप दिया।"

फिर उन्होने जल्दी-जल्दी सब कमरो मे जाकर देखा कि सब दरवाजे अच्छी तरह से बन्द तो हें। वे जानती थी कि देर सवेर शिकार-चोरो को पता चल जायेगा कि धनाई उन्हे चकमा दे गया है। पता लगते ही वे लौट पडेगे। वे यह भी जानती थी कि वे सबके सब खतरनाक और हताश व्यक्ति ह। यदि वे किसी तरह घर मे घुस आये तो धनाई पर वे घर के भीतर भी आक्रमण करने से पीछे न हटेगे। रात मे शिकार-

चोरो के भीतर घुस आने के विचार से ही वह काप उठी। किसी तरह से अपने को सभाल कर उन्होने धनाई के पीने के लिए दूध गरम किया और उसमे चाकलेट मिलाकर, ले आई।
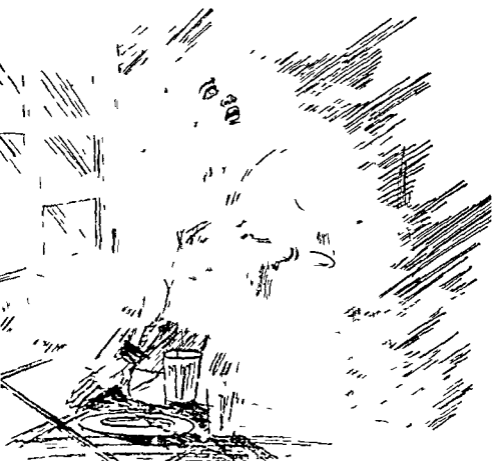
रात का समय था। दीवार-घडी दो बजा रही थी। उसके पति घर पहुचने ही वाले होगे। वह सोचने लगी कि क्या उन्हें वन विभाग के लोगो से सम्पर्क करना चाहिये जिससे वे दूसरे लडको को बचाने का प्रयत्न करे ? या वह अपने पति के पहुचने की प्रतीक्षा करे ?

वह पहले ही फूकन को विश्वास मे लेकर भारी गलती कर चुकी थी। हो सकता है कि विभाग मे कोई और भी विश्वास-घाती हो। दूसरे उनको बुलाने का अर्थ है कि वे घर के बाहर निकलें या किसी नौकर को भेजे तभी उन लोगो से सम्पर्क स्थापित कर सकती थी। क्योकि किसी के घर मे भी फोन नही था। घर से बाहर निकलना बुद्धिमानी नही होगी। शिकार-चोर किसी समय भी वापस आ सकते है। अन्त मे उन्होने निश्चय किया कि बुद्धिमानी इसी मे है कि वे अपने पति के आने की

प्रतीक्षा करे।

फूकन ने नियोग साहब के घर से एक फरलाग दूर ही गाडी रोक दी। फिर उसे एक कच्चे रास्ते मे मोड कर झाडियो की छाया मे खडा कर दिया।

"यहा से पैदल जाना ही अधिक ठीक होगा," उसने अपने साथियो से कहा, "जीप की आवाज से वे सावधान हो जायेगे। यदि हमे पता लग गया कि वह घर के भीतर छिपा है तो हम घर पर ही आक्रमण कर देगे।"

वे सब दबे पाव घर की ओर बढे। फूकन ने देखा कि कमरे मे बत्ती जल रही है। फूकन को विश्वास हो गया कि हो न हो लडका भीतर है।

"तैयार हो जाओ," वह बोला, "मुझे विश्वास है कि वह भीतर हे। हम भीतर चलकर अपना काम अभी समाप्त कर लेते है।"

उन सबने चुपचाप घर का चक्कर लगाया लेकिन इस गर्मी के मौसम मे भी घर के सब दरवाजे और खिडकिया अन्दर से बन्द थी।

"वे आक्रमण के लिए तैयार हे," मुनिया फुसफुसाया।

"हमे घर पर एकाएक आक्रमण कर देना चाहिये," फूकन ने तय किया।

"बापूराम सबसे पहले टेलीफोन के तार काट दो।"

बापूराम नाम का शिकार-चोर टेलीफोन के तार काटने के लिए पोल पर चढने ही वाला था कि अचानक एक आवाज आई और वह रुक गया। एक तेजी से आती हुई जीप का शोर

धीरे-धीरे पास आ रहा था ।

फूकन ने मुनिया के चेहरे पर पहली बार भय के चिह्न देखे । "चलो हम भाग चले," मुनिया ने कहा, "नियोग साहब वापस आ गये है । हमे जल्दी से यहा से निकल चलना चाहिए ।"

"किन्तु उनके साथ केवल एक ड्राइवर ही तो है । और उसके पास कोई हथियार भी नही है । हम उन पर आक्रमण कर के उन्हे आश्चर्य मे डाल सकते है ।"

परन्तु श्री नियोग की ऐसी धाक थी कि हृष्टपुष्ट शिकार-चोर भी उनसे डरता था । "नही," वह बोला, "हम जाते है ।"

फूकन ने उस लम्बे-चौडे आदमी को पकड लिया । उसका चेहरा भय से पीला हो रहा था । "हमे उन्हे मार डालना चाहिए," उसने उनसे विनती की, "नही तो मैं मारा जाऊगा । यदि लडके ने नियोग को सब कुछ बता दिया तो मुझे मरा हुआ ही समझो ।"

नेता ने फूकन को झटक कर दूर कर दिया । बिना कुछ कहे वह और बापूराम झाडियो की छाया की तरफ भागे । एक क्षण के लिए फूकन वहा असहाय सा खडा रहा और फिर उनके पीछे भागने लगा ।

दूर से उन्होने जीप को घर की तरफ जाते हुए देखा । जीप रुकते ही नियोग जीप से बाहर निकले । दरवाजा खुला और श्रीमती नियोग भागती हुई बाहर आ गई ।

जब शिकार-चोर और फूकन छिपी हुई जीप के पास पहुचे तो फूकन भय से काप रहा था । "मै बर्बाद हो गया, मेरा सत्यानाश हो गया," ड्राइवर की सीट पर बैठते हुए वह स्वय

ही बडबडा रहा था।

"तुम एक बात भूल रहे हो, फूकन," मुनिया बोला। उसके स्वर मे धमकी सुनकर फूकन ने उसकी ओर देखा।

"हा, मै ठीक कह रहा हू," शिकार-चोर फिर बोला, "तुम एक बात भूल गये हो। लडका तुम्हे ही तो जानता है किन्तु वह हमे तो नही पहचानता। केवल तुम ही एसे हो जो जानते हो कि इस मामले से हमारा भी सबध है। यदि तुम पकडे गये तो हम भी बर्बाद हो जायेगे। निश्चय ही तुम हमारा भडा फोड दोगे। हम यह नही होने देगे।"

फूकन ने चिल्लाने की कोशिश की पर उसके गले से कोई आवाज नही निकली। जब नेता ने लम्बे फल का चाकू निकाला तो उसने अपनी बाहो से अपने को बचाने का असफल प्रयास किया किन्तु नेता ने चाकू उसके पेट मे भोक दिया। फूकन की "हाय" निकली और वह अगली सीट पर तडपने लगा। घाव मे से रक्त बह निकला और नीचे गिरने लगा।

"चलो, बापूराम," मुनिया ने अपने साथी को पुकारा, "हम गाव से दोनो साथियो को लेकर छिपने के स्थान पर चलते है।"

बचाने के लिए चल पडे

धनाई की कहानी श्री नियोग शुरू से आखिर तक चुपचाप सुनते रहे। जब उन्होने यह सुना कि शिकार-चोरी मे फूकन का भी हाथ है तो उनको बडा धक्का लगा और गुस्सा भी आया। धनाई ने बताया कि उन्होने बोस को जाने से कैसे रोका है तो उन्होने स्वीकृति मे अपना सिर हिलाया। धनाई की कहानी समाप्त होने पर उन्होने उससे कुछ प्रश्न पूछे। उसके बाद तुरन्त अपने कार्य मे जुट गये।

श्री नियोग ने अपने अधीन काम करने वाले लोगो मे से कुछ को इकट्ठा किया और उन्हे एक स्थान पर सगठित होने के लिए कहा। फिर अपने विभाग की सब गाडियो मे पैट्रोल भरवा कर तैयार रहने का आदेश दिया। साथ ही साथ उन्होने गाव के मुखिया को भी खबर भिजवाई कि वे कुछ गाव वालो को जमा कर ले। और यदि आवश्यकता पडी तो सहायता के लिये तैयार रहे। उन्होने दूसरे आदमी को पुलिस थाने मे भेजा और उन्हे तत्काल सहायता भेजने के लिए कहा।

जब बचाव दल का सगठन किया जा रहा था तो श्री नियोग उस डाक्टर से मिलने गये जो बोस का इलाज कर रहा था। वन-विभाग के बड़े साहब को बोस के स्वास्थ्य की बहुत चिन्ता है, डाक्टर ने यह सोच कर उन्हे विश्वास दिलाया कि बोस सुबह तक बिलकुल ठीक हो जाएगा और अगले दिन वह वहा से जा भी सकेगा।

"इससे तो मामला ही विगड जायेगा," श्री नियोग ने आश्चर्यचकित डाक्टर से कहा। "डाक्टर साहव आपको कोशिश करनी होगी कि वह किसी न किसी तरह एक दिन और यहा रुक जाये। कुछ भी करिये लेकिन डाक्टर साहव उसे एक दिन और रोकना ही होगा।"

"ऐसा नही हो सकता," डाक्टर ने विरोध किया।

तव श्री नियोग ने डाक्टर को वताया कि वोस एक अपराधी है और उसे माल के साथ निकल जाने का अवसर कभी नही मिलना चाहिये। डाक्टर को सावधान करने के बाद कि यह वात उन तक ही सीमित रहे श्री नियोग ने एक सादे कपडो वाले पहरेदार को वोस के कमरे के वाहर पहरा देने के लिये नियुक्त कर दिया।

जब श्री नियोग वापस अपने दफ्तर पहुचे तो उन्होने देखा कि वचाव दल तैयार है और दल के अधिकाश आदमी सशस्त्र भी ह।

दल तत्काल उस वगले के लिए चल पडा जिसमे लडको की शिकार-चोरो से लडाई हुई थी। जैसी आशा थी वगला विलकुल खाली पडा था लेकिन वहा ऐसे वहुत सारे चिह्न मिले जिनसे पता चलता था कि शिकार-चोर यहा आये थे पर उन्हे ऐसा कोई सकेत नही मिला जिससे यह पता लगता हो कि वे कहा गये ह। उन्होने वगले और उसके आसपास के स्थानो की खूव अच्छी तरह से खोजवीन की किन्तु कोई भी उपयोगी चिह्न या वस्तु नही मिली।

"यहा समय नष्ट करने मे कोई लाभ नही होगा," श्री

नियोग ने साथियो से कहा, "अब हम गाव चलते है किन्तु मुझे सन्देह है कि वहा भी कोई हमे किसी प्रकार की सहायता दे सकेगा।"

सारे गाव निवासी गुस्से से उबल रहे थे। कुछ स्त्रियाँ जिसमे जुडवा भाइयो की माता भी थी, रो रही थी। ग्राम निवासी केवल इसकी प्रतीक्षा कर रहे थे कि किसी तरह से इन शिकार-चोरो को पकड पाये। जैसे ही बचाव दल गाव मे पहुचा बहुत सारे आदमियो ने श्री नियोग को घेर लिया और समाचार पूछने लगे।

"जैसे ही हमे कोई समाचार मिलेगा हम वापस आ जायेगे," श्री नियोग ने उनसे कहा, "हा तब तक तुम सब खूब सतर्क रहो और साथ के गाववालो को भी सतर्क कर दो।"

पर मन मे वे अनुमान लगाये थे कि शिकार-चोरो की इस तलाश मे शायद कई दिन लग जाये। जगल मे कई सौ ऐसे स्थान हैं जहा वे छिप सकते ह। सबसे अधिक चिन्ता उन्हे बुबुल और जोन्ती की थी। शिकार-चोर निर्दयी और दुष्ट होते है। यदि उन्हें उन जुडवा भाइयो को साथ रखना कठिन हो गया तो वे उन्हे मार भी सकते है।

श्री नियोग सोचने लगे कि पुलिस के कुत्ते उनकी मदद कर सकते है। अब नष्ट करने के लिये समय नही है। यदि वर्षा हो गई तो चोरो की गन्ध मिट जायेगी और कुत्ते उनका पता नहीं लगा पायेगे। उन्हें तत्काल गौहाटी फोन कर के दो तीन पुलिस के प्रशिक्षित कुत्ते मगाने चाहिये।

"जल्दी करो," उन्होंने ड्राइवर से कहा, "हमे जल्दी घर

पहुचना चाहिए। मुझे एक जरूरी फोन करना है।"

लेकिन वह फोन न हो सका।

● ● ● ●

फूकन आगे की सीट पर लेटा हुआ था। वह जानता था कि वह मर रहा है। उसके मन मे अनेक विचार और बातें उमड-घुमड रही थी। बचपन के अनेक दृश्यो की स्पष्ट झलक उसे दिखाई दे रही थी। पुराने स्मृति चित्र तेजी से उभरते और फिर गायब हो जाते।

उसे जानवर सदा प्रिय रहे थे। बचपन मे वह अपने को जानवरो से घेरे रहता था। भैंसें, गायें और बकरिया, दो कुत्ते और बिल्ली वह सबको प्यार करता था। अपने इसी प्रेम के कारण उसने वन-विभाग मे नौकरी की थी। जानवर भी उसे प्यार करते थे। उन्होने कभी उसे परेशान नही किया। किन्तु अब उसी ने उनके साथ विश्वासघात किया था। आरक्षित वन मे जानवरो की सुरक्षा का भार उसके ऊपर था। और अब उसी ने स्वय जानवरो को मारने मे दुष्टो की सहायता की। केवल पैसे के लिए। और अब वह असहाय जीप मे पडा था। उसके शरीर से रक्त बह रहा था। अब वह अपने उस विश्वास-घात का मूल्य चुका रहा था।

फूकन के मस्तिष्क मे वर्तमान उभर कर आ गया। अब *केवल एक ही विचार उसमे रह गया। वह मरने से पहले कम* से कम एक अच्छा काम अवश्य करेगा। वह सोचने लगा कि लडके चोरो के पजे मे हैं। उन्हे बचाने के लिये किसी न किसी तरह विभाग से सम्पर्क करना ही होगा। उसे विभाग को यह

भी बताना ही होगा कि वे उन्हें कहा ले गये है।

बहुत कठिनाई से फूकन ने अपने को सभालकर सीधा किया। उसका सिर चकरा रहा था और उसका अपने अगो पर नियन्त्रण कम होता जा रहा था। पर अपनी तीव्र इच्छाशक्ति द्वारा ही उसने अपने को बैठने की अवस्था मे किया और स्टीयरिंग ह्वील का सहारा लेकर उसके ऊपर झुक गया।

कुछ क्षण वह स्टीयरिंग ह्वील पर ही पडा रहा। अपने शरीर की बची शक्ति बटोरकर उसने बाये हाथ से स्टार्टर को घुमाने की चेष्टा की। उसने चाबिया हाथ मे जकड ली। उसकी उगलिया रक्त और पसीने से तर-बतर होने के कारण फिसलनी हो गई थी। बडी मुश्किल से फूकन ने जीप की बत्तिया जलाई और कठिनाई से अपने को झुकाया। ऐसा करने से उसका सिर स्टियरिंग ह्वील की सीध मे आ गया। और उसने बैठने की कोशिश की। किन्तु अब उसमे शक्ति नही रह गई थी और वह स्टीयरिंग ह्वील पर ही गिर पडा। उसका सिर हार्न पर लगा। रात की भयानक खामोशी जीप का हार्न बजने से टूट गई।

● ● ● ●

"यह क्या है?" श्री नियोग ने पूछा और उनकी जीप ची-ची करती हुई रुक गई।

ड्राइवर ने जीप मोडी। वह उसे कच्चे रास्ते पर ले गया और उस जीप के निकट खडा कर दिया जिसमे फूकन पडा था। उन्होने देखा कि एक शिथिल शरीर स्टीयरिंग ह्वील पर झूल रहा है।

श्री नियोग कूद कर नीचे उतरे और लपककर दूसरी जीप

के पास पहुचे । रक्त की परवाह किए बिना उन्होंने फूकन को उठा लिया और सावधानी से बाहर निकाला और ड्राइवर को आदेश दिया, "जल्दी से स्ट्रेचर और डाक्टर को ले कर आओ।"

श्री नियोग ने फूकन को घास पर लिटा दिया और उसकी नब्ज टटोलने लगे । वह बहुत धीमी चल रही थी ।

उन्होंने देखा कि फूकन के ओठ हिल रहे ह । जैसे कि वह कुछ कहना चाह रहा हो । वह उस पर झुक गये । "फूकन, क्या तुम कुछ कहना चाहते हो ?"

"बहुत देर हो गई   देर हो गई," फूकन की आवाज बहुत धीमी थी । "अब मेरी परवाह मत करिए   लडको का ख्याल   झोपडी   " फूकन का स्वर कम होता हुआ बन्द हो गया ।

"कौन सी झोपडी, फूकन ? भगवान के वास्ते बताओ, कौन-सी झोपडी ?"

"झोपडी   गढे के निकट   हम वहा गये थे   । वह मुनिया का गिरोह है। उन्होने मुझे मार डाला   लडको बहुत देर हो गई   देर हो गई   " कहते कहते वह वही ढेर हो गया ।

फूकन का शरीर अकड गया और आखे पथरा गई ।

जोन्ती ने किसी तरह से दीवार का निचला भाग काट-काट कर इतना बडा सुराख कर लिया कि लडके उसमे से सिकुड कर बाहर निकल सकते थे । इस काम मे दोनो पहरेदारो ने बिलकुल कोई बाधा खडी नही की । उन्हे पूरा विश्वास था कि उन्होने लडको को रस्सी से इतना कस कर बाधा है कि वे कुछ भी नही कर सकते । वे आराम से बाहर बैठे बतिया रहे थे ।

जोन्ती ने तत्काल बाहर निकलना ठीक न समझा क्योकि वह जानता था कि पहरेदार सशस्त्र है । और हो सकता है उन्हें आदेश हो कि यदि लडके भाग निकलने का प्रयत्न करे तो उन्हे गोली मार दी जाय । दीवार वाले छेद मे से एक-एक करके निकलना इतना आसान नही था । जरा सी गलती या हल्की सी आवाज हुई तो खतरा था कि उनको गोली मार दी जायेगी ।

भाग निकलने के लिए उन्हे कुछ ऐसा करना था जिससे पहरेदार झोपडी से बाहर निकल जाये और उनका ध्यान बट जाय । किन्तु जोन्ती कोई ऐसी युक्ति न सोच सका जिससे पहरेदारो का ध्यान दूसरी ओर आकर्षित हो जाय ।

इसी तरह से आधा घटा और बीत गया । जोन्ती सोचने लगा कि क्या झोपडी मे ही बैठे रहना बुद्धिमानी होगी ? जिस खतरे मे वे थे उसमे पहरेदारो के झोपडी मे रहते हुए बाहर निकलने का जोखिम उठाना शायद ठीक ही होगा । अभी वह सोच ही रहा था कि परिस्थिति उसके काबू से बाहर हो गई ।

तभी बाहर भागते हुए पैरो की आवाज आई और दोनो पहरेदार सतर्क हो गये। उन्होने अपने रिवाल्वर हाथो मे ले लिए। किन्तु वे तो मुनिया और तीन अन्य शिकार-चोर थे। वे झुक कर झोपडी मे घुसे और हापते हुए जमीन पर लेट गये।

"खेल खतम हो गया," जब मुनिया का हाफना कुछ कम हुआ तो वह बोला, "नियोग लौट आया है और शायद वह लडका भी उसके घर मे ही है। हमारे सौभाग्य से वह लडका हमे पहचानता नही है। इसलिए मैंने फूकन को मार दिया है। केवल वही हमारा भण्डा फोड सकता था। अब तक तो उन्हे इन दोनो लडको का भी पता चल गया होगा। किन्तु हमे कोई पहचान नही सकता। अब वहा काफी सरगर्मी होगी। हम यहा बिलकुल सुरक्षित हे। तुम दोनो बाहर पहरे पर खडे रहो।"

"मुनिया, अब हम क्या करे?" एक चोर ने पूछा।

"जब तक सरगर्मी समाप्त होती है तब तक हम यही चुपचाप पडे रहेगे। वे हमे ढूँढने मे धरती और आकाश एक कर देंगे। किन्तु वे यह नही जानते कि हम कहा ह। जब रात जरा शात और गहरी हो जायेगी तो हम नाव द्वारा ब्रह्मपुत्र को पार करके उसके उत्तरी किनारे पर चले जायेंगे और वहा छिप जायेगे। वहा मेरे कुछ मित्र है वह हमारी अवश्य सहायता करेगे। मेरे पास तीन सीगो के पैसे है। उसे हम बाट लेगे। जब तक हम फिर से काम आरम्भ करें इससे हमारा खर्चा चल जायेगा।"

"पर इन दो लडको का क्या किया जाये? क्या हम इन्हें मार कर झील मे फेंक दे?"

"हम अभी उन्हे कुछ देर और जीवित ही रखेगे। हो सकता है कि वे हमारे सुरक्षित निकलने का साधन बन जाये। एक बार हम यहा से निकल जाये तो फिर उनसे पीछा छुडा लेगे।"

"मुनिया, तुम बहुत बुद्धिमान हो," शिकार-चोर बापूराम बोला।

"बडा अच्छा हुआ कि हम तुम्हारे दल मे शामिल हो गये। वहा बाहर एक बार तो ऐसा लग रहा था कि हम सब समाप्त हो गये है।"

नेता मुनिया अपने आप मे ही प्रसन्न हो कर बोला "बापूराम, इसमे सन्देह नही कि हमारी समस्या काफी टेढी थी। किन्तु मुनिया तो मुनिया है। कैसी भी उलझन क्यो न हो वह उसे सुलझा सकता है। मेरे साथ रहते तुम्हे कभी भी पछताना नही पडेगा।"

"पैसो का क्या होगा ?" एक चोर ने पूछा। वह अपना हिस्सा पाने के लिए आतुर था।

"पैसा सब यहा है," मुनिया ने उन्हे एक काले चमडे की थैली दिखाते हुए कहा। "हम इसे अभी बाट लेते है। किन्तु पहले लडको को देख लो। देखो वे ठीक से बधे भी है कि नही।"

उनकी बाते सुनकर बुबुल और जोन्ती ने अपनी सासें रोक ली। एक शिकार-चोर उनकी ओर बढ रहा था। जोन्ती को अब अफसोस हो रहा था कि उसने पहले निकल भागने का अवसर क्यो खो दिया। पर उसने अपना चाकू कस कर पकड लिया। यदि लडाई ही हुई तो वह उन्हे ऐसे ही नही छोडेगा। उन्हें ऐसा मजा चखायेगा कि वे भी याद करेंगे।

जैसे ही शिकार-चोर उनके वन्धन देखने के लिए झुका, बाहर बन्दूक चलने की आवाज सुनाई दी । झोपडी मे सभी सास रोककर खडे हो गये। कुछ देर बाद मुनिया हाथ मे राइफल लिए दरवाजे की ओर वढा । अन्य सब उसके पीछे-पीछे गये ।

जोन्ती ने सोचा अब और प्रतीक्षा करना बेकार है । वह जल्दी-जल्दी सरक कर झोपडी की दीवार के सुराख मे से होकर बाहर निकल आया। उसने वुवुल को भी जल्दी करने को कहा। दोनो लडके खुले मे आ गये।

बाहर गोलियो की आवाज बहुत तेज थी। वे उनके सिर के ऊपर से धाय-धाय करती निकल रही थी।

"नीचे झुके रहो," जोन्ती ने चेतावनी दी, "यह स्थान वहुत खतरनाक है। चलो कोई और जगह ढूंढे।"

वह भूमि पर पेट के वल सरकता हुआ एक छिछले गढे के पास जा पहुचा और उसमे लुढक गया । पीछे-पीछे वुवुल भी उसमे आ गया। इस गढे से वे झोपडी और उसके आसपास के स्थानो को स्पष्ट रूप से देख सकते थे।

चोर भूमि पर लेटे हुए आसपास चमकने वाले प्रकाश के विन्दुओ पर गोलिया चला रहे थे । अचानक उनमे से एक चोर 'हाय-हाय' चिल्लाया, तडपा और वही ढेर हो गया । उसे गोली लग गई थी। एक और चिल्लाने की आवाज से उन्हे पता चला कि वचाव दल मे से भी कोई घायल हो गया है।

गोली बराबर चल रही थी। जो भी इस वचाव दल का नेता था वह वहुत चालाकी से काम ले रहा था। उमे भरोसा था कि दूर रहने से उसके दल के लोगो को गोलिया नही लगेंगी।

इसके साथ ही शिकार-चोरो की गोलियो का भण्डार भी समाप्त हो जाएगा। एक बार उनकी गोलिया समाप्त हो गई तो वे बचाने वाले दल की दया पर निर्भर होगे।

मुनिया बचाव दल की चालाकी समझ गया। उसने अपने साथियो को गोली न चलाने का आदेश दिया और चोरो ने गोलिया चलानी बद कर दी। बचाव दल कुछ देर और गोलिया चलाता रहा किन्तु जब सामने से उत्तर नही मिला तो उन्होने भी गोलिया चलानी बन्द कर दी। और वहा एक अजीब सा सन्नाटा छा गया। दोनो तरफ के लोग इस प्रतीक्षा मे थे कि पहला पासा कौन फेकता है। "यही अवसर ह कि हम निकल भागे," बुबुल बुदबुदाया, "चलो जल्दी से निकल चले।"

जोन्ती ने उसे नीचे खीच लिया। "नीचे ही रहो," उसने तेजी से कहा, "ये बचाने वाले नही जानते ह कि हम भाग निकले है। यदि हम उनकी ओर लपके तो कही गलती से वे हमे चोर समझकर गोलिया चलाना आरम्भ न कर दे।"

बुबुल ने बहस नही की और वही ठहरा रहा। दोनो तरफ से गोलिया न चलने से जो एक अनायास भयानक सन्नाटा छा गया था वह अभी वैसा का वैसा ही था। तभी ढोलक की तीव्र आवाज ने इस सन्नाटे को भग कर दिया। ढोलक का स्वर उग्र होता जाता था।

"यह बिहुआ ह, हमारे गाव का ढोल बजाने वाला," बुबुल ने धीरे मे कहा, "मैं उसके बजाने के ढग से उसके ढोल का स्वर कही भी पहचान सकता हू।"

ढोल का स्वर अचानक रुक गया। ठीक वैसे ही जैसे वह

अचानक शुरू हुआ था। एक बार फिर चारो ओर नीरवता का शासन था। जोन्ती और बुबुल देख रहे थे कि यह खामोशी चोरो को परेशान कर रही है। भूमि पर लेटे-लेटे ही दो चोरो ने परेशानी से करवट बदली।

एक ऊची आवाज ने फिर खामोशी को तोड दिया। ध्वनि-विस्तारक (लाऊड स्पीकर) मे से नियोग मामा का ऊचा स्वर सुनाई दिया।

"कान खोल कर सुनो," स्वर चारो ओर फैल गया, "हमने तुम्हे चारो ओर से घेर लिया है। हथियार नीचे फेक दो, अपने हाथ सिर के ऊपर उठाकर एक-एक कर के हमारी ओर बढो। तुम्हे पाच मिनट का समय दिया जाता है। यदि इतने समय मे तुम लोग बाहर आकर आत्मसमर्पण नही करते तो हम आगे बढकर तुम्हें गोलियो से भून देगे।"

इसके उत्तर मे मुनिया बडे जोर से हस पडा और वह हसता ही रहा। "नियोग," वह चिल्लाया, "तुम भूल गये हो कि हमारे पास दो बच्चे ह। यदि तुम अपने आदमी हटा कर हमे कुशलता से निकल नही जाने दोगे तो हम उनकी गर्दन उडा देगे। यदि तुम्हे विश्वास नही होता तो मैं उन्हे बाहर ला कर दिखाता हू। हा—हा—हा।"

"हम बच्चे हे, खूब कही," बुबुल बोला, "उसे जल्दी ही पता चल जायेगा कि बच्चा कौन है।"

मुनिया और बापूराम झोपडी मे घुस गये। सब की नजर झोपडी के दरवाजे पर थी किन्तु कोई बाहर न आया।

पाच मिनट बीते, फिर दस मिनट। बाहर खडे चोर भय-

भीत हो रहे थे। तब जोन्ती और बुबुल ने एक अजीब दृ
देखा। वे जानते थे कि मुनिया को झोपडी खाली देखकर व
धक्का लगा होगा।

उन्होंने देखा कि जोन्ती ने झोपडी की पिछली दीवार
जो सुराख बनाया था उसी मे से मुनिया झोपडी के बा
निकला। उसने चारो ओर देखा। फिर तेजी से झील की अं
बढने लगा।

जोन्ती और बुबुल ने समझ लिया कि मुनिया झील मे
तैर कर दूसरे किनारे पर निकल जायेगा और भाग जायेगा
इसी समय उन्हे नियोग मामा को उसके अभिप्राय के बारे
बता देना चाहिए। किन्तु वे असहाय थे। अन्य चोर अभी भ
झोपडी के निकट थे। यदि इन जुडवा भाइयो ने कोई ऐसी बा
की कि नियोग मामा का ध्यान उनकी ओर आकर्षित हो त
चोर उन्हे गोली मार सकते है।

बापूराम अब झोपडी से बाहर निकला। वह खुले स्थान
आ गया और उसने आत्मसमर्पण के सकेत के रूप मे अपन
राइफल नीचे फेक दी। फिर अपने हाथ सिर से ऊचे कर
नियोग मामा की ओर बढने लगा।

बापूराम का ऐसा करना औरो के लिए भी सकेत था
अन्य शिकार-चोरो ने भी अपने हथियार फेंके और आगे ब
आये। पाचवा चोर नही उठा। वह मर चुका था।

यह देखकर बुबुल जोर से चिल्लाया, "नियोग मामा
नियोग मामा, उनका नेता वहा है। वह झील को पार कर के
भागना चाहता है ।"

आत्म-समर्पण

इस समय तक पूरे का पूरा गाव उस स्थान पर जमा हो गया था। वे जानना चाहते थे कि लडको का क्या हुआ ? स्त्री, पुरुष और बच्चे सब उनका समाचार जानने के लिए उत्सुक थे। सवेरा होने पर जब वे सब प्रतीक्षा करते-करते थक गये तो आरक्षित वन की ओर चल पडे, जिससे वे भी बचाव दल मे शामिल हो जायें।

टोलियो मे खडे लोग झोपडी की ओर देख रहे थे और सोच रहे थे कि देखे अब मुनिया क्या करता है। इसी समय उन्होने बुबुल का चेतावनी भरा स्वर सुना।

सब की आखे झील की ओर मुड गईं। उन्होने देखा कि मुनिया झील को चलकर पार कर रहा है। ऊची-ऊची झाडियो तथा घास के कारण वह दृष्टि से ओझल हो गया था। थोडी देर बाद ही उन ऊची झाडियो मे हलचल होने लगी। मुनिया फिर दिखाई देने लगा। वह झाडियो और कीचड मे से निकल कर तट पर लौटने का प्रयास कर रहा था। यद्यपि वह जमीन पर पहुच गया था फिर भी वहा इतनी फिसलन थी कि वह कदम-कदम पर लडखडा रहा था। उसका चेहरा भय से पीला पड गया था। सभी चुपचाप खडे देख रहे थे और मुनिया के इस अजीब व्यवहार पर आश्चर्य कर रहे थे। तभी झील के छिछले पानी मे से क्रोध से गुर्राता-गर्जता एक गैंडा बाहर निकला। गैंडा एक टक तीखी दृष्टि से बाहर निकलने का प्रयत्न करते